यूको रायपुर प्रभा

रायपुर अंचल की गृह पत्रिका

वर्ष : 3 , अंक : 1 , अप्रैल – सितंबर 2020

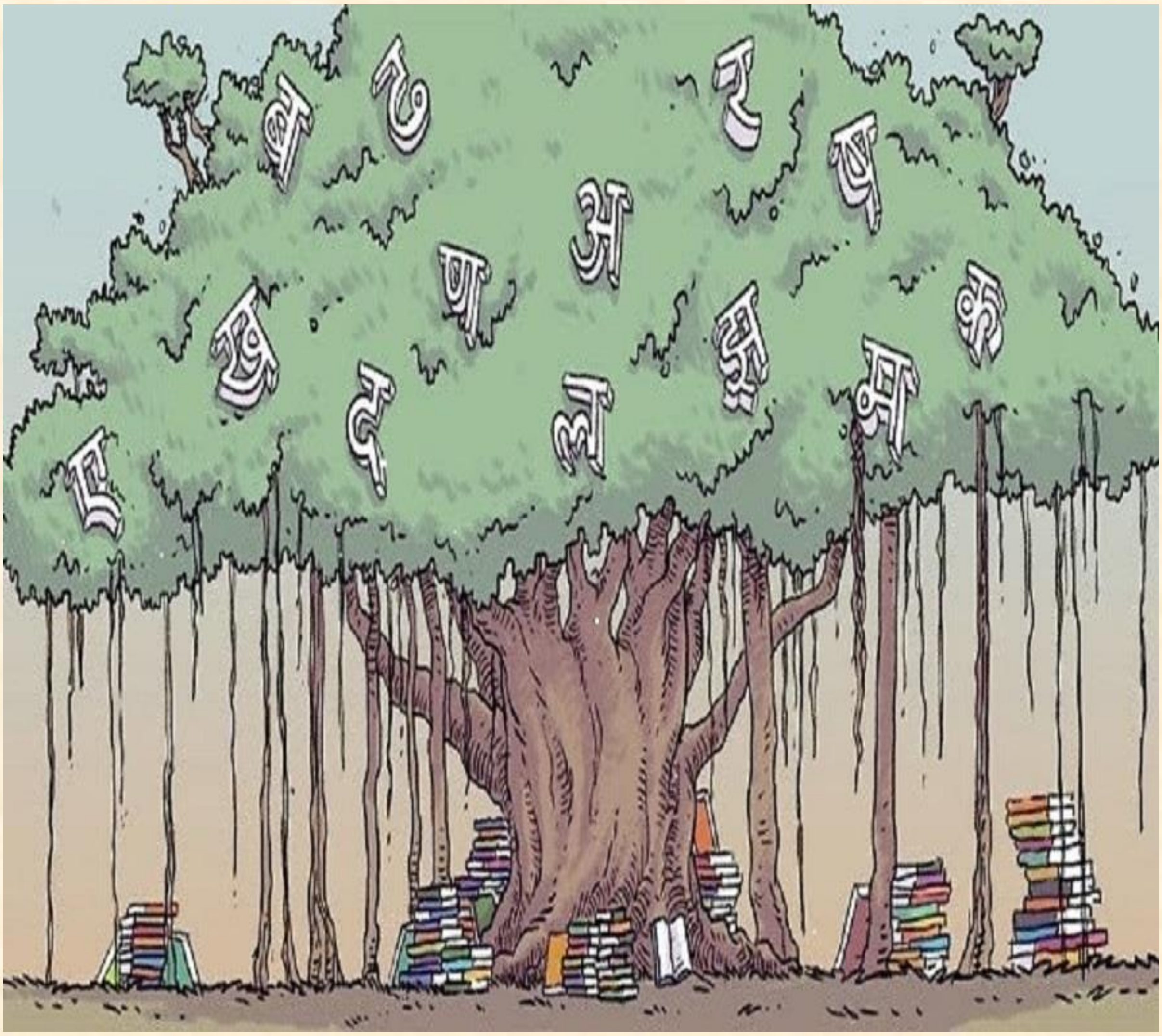

यूको बैंक UCO BANK

(भारत सरकार का उपक्रम) (A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust

भारतीय भाषा सौहार्द स्वरूप हिंदी दिवस समारोह 2020 के यादगार पल

यूको रायपुर प्रभा

अंचल कार्य़ालय,रायपुर की गृह पत्रिका

वर्ष : 3 , अंक : 1

अप्रैल - सितंबर 2020

संरक्षक

सत्य रंजन पण्डा, अंचल प्रमुख

परामर्श

सुरेश कुमार दास, उप अंचल प्रमुख
टी.एन. बर्णवाल , मुख्य प्रबंधक
सौरभ श्रीवास्तव , मुख्य प्रबंधक
गौरव सहगल ,मुख्य प्रबंधक
पी.के. पाणिग्राही ,मुख्य प्रबंधक (सुरक्षा)

संपादक

सुभाष चंद्र साह, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

संपादकीय पता

यूको बैंक
अंचल कार्यालय,रायपुर
छत्तीसगढ़ नेत्र चिकित्सालय
परिसर, प्रथम तल , तेलीबांधा,
रायपुर (छ.ग.) – 492006
दूरभाष : 0771-4233103
zoraipur.ol@ucobank.co.in
zo.raipur@ucobank.co.in

विषय सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ सं.
1	विषय सूची	1
2	अंचल प्रमुख का संदेश	2
3	संपादकीय	3
4	रायपुर अंचल : एक दृष्टि में	4
5	संकट ,नेतृत्व एवं सफलता	5-7
6	कोविड-19 का सामाजिक आर्थिक परिदृश्य पर प्रभाव	8-12
7	कोविड काल एवं डिजिटलीकरण	13-14
8	कोरोना महामारी आपदा का प्रभाव	15-19
9	हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं का संबंध	20-22
10	आत्मनिर्भर भारत अभियान	23-25
11	आत्मनिर्भर भारत का आधार – अपनी भाषा , अपनी संस्कृति	26-31
12	व्यक्तित्व विकास रूक जाना नहीं ,कहीं हार के	32-33
13	लोक आंगन सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर	34
14	सृजन	35
15	प्रेरणा के पुष्प	36
16	राजभाषा प्रश्नोत्तरी	37
18	भारतीय भाषा सौहार्द स्वरूप हिंदी दिवस समारोह	38
19	हिंदी माह के दौरान आयोजित प्रतियोगिता के परिणाम	39
20	बाल प्रतिभा	40

इस पत्रिका में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं । यूको बैंक या संपादक का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

अंचल प्रमुख का संदेश

प्रिय साथियो,

मुश्किलें एवं चुनौतियां हर संस्था एवं व्यक्ति की परीक्षा लेती हैं। आज के समय में किसी संस्था द्वारा विकास के पथ पर अग्रसर होकर लाभ अर्जित करना एक बड़ी चुनौती है। उस चुनौती को पार करते हुए हमारे बैंक ने लाभ अर्जित किया है ,जो प्रत्येक यूको जन की कर्मठता एवं समर्पण का प्रतीक है।

बैंक की लाभप्रदत्ता में अंचल के उल्लेखनीय योगदान को रेखांकित करने के लिए आने वाली तिमाहियों में बेहतर कार्यनिष्पादन तथा व्यावसायिक लक्ष्यों को प्राप्त करने की हमारे ऊपर बड़ी जिम्मेदारी है।

बैंक की लाभप्रदत्ता की निरंतरता को कायम रखने का सर्वोच्च एवं प्रत्यक्ष माध्यम क्रेडिट पोर्टफोलियो को बढ़ाना है। एक गुणवत्तायुक्त , विविध एवं वृहत क्रेडिट पोर्टफोलियो की ओर ध्यान केंद्रित करना अनिवार्य है । रिटेल , कृषि एवं एमएसएमई पर फोकस करते हुए क्रेडिट पोर्टफोलियो बढ़ाने हेतु निरंतर मौजूदा एवं भावी ग्राहकों से संपर्क कर उनकी आवश्यकता के अनुरूप बैंकिंग सुविधाएं प्रदान करने की प्रति प्रत्येक स्टाफ सदस्य का गंभीर होना समय की पुकार है। हमें प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी महोदय के न्यूनतम दो गृह ऋण लीड्स के आह्वान को हर हाल में पूरा करना है । इसके साथ ऋण आस्ति ,खास तौर पर विशेष उल्लेखनीय आस्ति को स्वस्थ बनाए रखने के लिए कड़ी निगरानी रखना आवश्यक है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि वसूली के लिए अनवरत प्रयास करना हमारा सर्वश्रेष्ठ दायित्व है । इसके अलावा हमें निम्नांकित क्षेत्रों पर भी पैनी नजर रखते हुए प्रतिबद्ध प्रयास करना चाहिए –

i) डिजिटल उत्पादों की पहुँच व्यापक बनाना
ii) राजस्व रिसाव पर रोक
iii) ब्याजेतर आय के लिए बैंकाश्योरेंस व्यवसाय
iv) अनुपालन एवं नियंत्रण प्रणाली का कड़ाई से पालन
v) सर्वोत्तम ग्राहक सेवा प्रदान करना
vi) संवैधानिक प्रावधानों के अनुपालन एवं व्यावसायिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए राजभाषा हिंदी का अधिकतम प्रयोग

अंचल एवं बैंक की समग्र प्रगति के लिए सभी शाखाओं का समावेशी सहयोग एक अनिवार्य शर्त है। अंचल के सभी स्टाफ सदस्यों द्वारा मौजूदा एवं भावी ग्राहकों से संपर्क करना इस दिशा में सफलता का महत्वपूर्ण सूत्र तथा प्राथमिक लक्ष्य है । प्रत्येक शाखा द्वारा व्यावसायिक लक्ष्य पूरा करने का संकल्प ही सफलता का मूल मंत्र है।

यह पत्रिका आप सबकी है। अपनी रचनाओं एवं सुझावों से इस पत्रिका को और अधिक समृद्ध करें,यही कामना है।

स्वस्थ एवं सुरक्षित जीवन की शुभकामनाओं के साथ,

आपका ,

सत्य रंजन पण्डा

संपादकीय

प्रिय साथियो,

'यूको रायपुर प्रभा' का नवीनतम अंक आपके समक्ष हुए प्रस्तुत करते मुझे प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका रायपुर अंचल का दर्पण है एवं यहाँ के स्टाफ सदस्यों की सृजनात्मकता की पहचान है।

बैंकिंग ,हिंदी , व्यक्तित्व निर्माण से संबंधित विभिन्न आलेखों ,कविताओं एवं गतिविधियों की झांकियों से इस अंक को सजाया गया है। संकट ,नेतृत्व एवं सफलता , कोविड -19 का सामाजिक – आर्थिक जीवन पर प्रभाव, आत्मनिर्भर भारत का आधार – अपनी भाषा , अपनी संस्कृति , रूक जाना नहीं,कहीं तू हार के आदि आलेख इस अंक के मुख्य आकर्षण हैं।

अंचल की विभिन्न गतिविधियों से सभी को अवगत कराना एवं स्टाफ सदस्यों की रचनात्मक प्रतिभा को पहचान दिलाने के साथ – साथ राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के प्रति स्टाफ सदस्यों को चैतन्य बनाना भी इस पत्रिका का प्रमुख उद्देश्य रहा है।

हमारे अंचल में भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं, परन्तु हम भारत सरकार एवं प्रधान कार्यालय की अपेक्षाओं पर पूर्णत: खरे नहीं उतर पाए हैं । बैंक के शीर्षतम प्रबंध तंत्र की अपेक्षा है कि बैंक को भारत सरकार का सर्वोच्च राजभाषा पुरस्कार प्राप्त हो एवं अंचल कार्यालयों को भारत सरकार के क्षेत्रीय पुरस्कार प्राप्त हों। हम अभी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के पुरस्कारों तक ही सीमित हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को नई ऊर्जा के साथ चरितार्थ करना है । हम न केवल स्वयं हिंदी में काम करें ,बल्कि दूसरों को भी हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करें। यदि हम अपने दो दो साथियों को भी हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करेंगे तो हिंदी में काम करने वालों की एक ऐसी कड़ी बन जाएगी,जिसके सभी अभिन्न अंग बन जाएंगे। 'सबकी जिम्मेदारी- सबकी भागीदारी' से कोई भी लक्ष्य कठिन नहीं। जीता वही,जो डरा नहीं । हारा वही .जो लड़ा नहीं।

राजभाषा के क्षेत्र में हमारा संकल्प है - राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के क्षेत्र में रायपुर अंचल को एक नई पहचान दिलाना एवं शीर्ष प्रबंध तंत्र की अपेक्षा के अनुरूप भारत सरकार का प्रतिष्ठित 'क्षेत्रीय पुरस्कार' प्राप्त कर बैंक को गौरवान्वित करना ।

मैं उन रचनाकारों व लेखकों का आभारी हूँ, जिनकी रचनाओं से यह पत्रिका सजी है। मैं विभिन्न मनीषियों, विद्वानों एवं साहित्यकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ ,जिनके विचारों से पत्रिका लाभान्वित हुई है । मैं पत्रिका प्रकाशन के सभी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोगियों को भी साधुवाद देता हूँ।

यह पत्रिका आपकी आकांक्षाओं एवं अपेक्षाओं का संवाहक बने, इसके लिए आपके विचारों तथा सुझावों का हार्दिक स्वागत है।

स्वस्थ एवं सुरक्षित जीवन की शुभकामनाओं के साथ,

आपका ,

सुभाष चंद्र साह

रायपुर अंचल : एक दृष्टि में

1	शाखाओं की कुल संख्या	56
2	ग्रामीण शाखाएं	18
3	अर्द्ध शहरी शाखाएं	18
4	शहरी शाखाएं	14
5	मेट्रो शाखाएं	06
6	बहुत बड़ी शाखाएं (वेतनमान-4)	11
7	बड़ी शाखाएं (वेतनमान -3)	17
8	मंझौली शाखाएं (वेतनमान -2)	21
9	छोटी शाखाएं (वेतनमान -1)	7
10.	अंचल में एटीएम की कुल संख्या	45

रचना आमंत्रण

सभी स्टाफ सदस्यों से अनुरोध है कि पत्रिका के लिए बैंकिंग , सूचना प्रौद्योगिकी,अर्थव्यवस्था, राजभाषा ,व्यक्तित्व विकास ,तनाव प्रबंधन ,समय प्रबंधन व अन्य विषयों पर उपयोगी व मौलिक आलेख तथा साहित्य की विविध विधाओं के अंतर्गत संस्मरण ,लघु कथा, कविता आदि प्रेषित करें। रचनाकार अपनी रचना कागज के एक ओर स्पष्ट अक्षरों में लिखकर या यूनिकोड में टंकित कर मौलिकता प्रमाण पत्र (जिसमें यह स्पष्ट उल्लेख हो कि रचना मौलिक है ,प्रकाशनार्थ आदि के लिए अन्यत्र नहीं भेजा गया है तथा यूको रायपुर प्रभा या यूको रायपुर रश्मि में प्रकाशनार्थ प्रेषित है) के साथ भेजें। कृपया यूनिकोड में टंकित रचना तथा तस्वीर ई- मेल के माध्यम से सॉफ्टकॉपी में प्रेषित करें। हमें शाखाओं की विशिष्ट गतिविधियों की सचित्र रिपोर्टों की भी प्रतीक्षा है। पत्रिका को और अधिक स्तरीय बनाने के लिए आपके रचनात्मक सुझाव तथा सकारात्मक प्रतिक्रिया विशेषत: आमंत्रित हैं।

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।

महावीर प्रसाद द्विवेदी

संकट , नेतृत्व और सफलता

सत्य रंजन पण्डा
अंचल प्रमुख

समर्थ नेतृत्व कुशल मांझी की तरह होता है ,जो झंझावतों की प्रतिकूलता में भी धैर्य धारण कर नौका को किनारा लगाने में सफलता प्राप्त करता है। जीवन के हर क्षेत्र में कुशल नेतृत्व का अपरिमित महत्व है । सफलता या असफलता में अन्य कारकों के साथ साथ नेतृत्व क्षमता की भूमिका निर्णायक होती है। एक समान परिस्थिति एवं संसाधन रहते हुए भी अलग – अलग नेतृत्व के परिणाम आश्चर्यजनक रुप से अलग – अलग मिलते हैं। नेतृत्व की शक्ति असीमित होती है , तभी तो करिश्माई नेतृत्व का जादू सर चढ़कर बोलता है।

यूँ तो सामान्य स्थिति में भी किसी संगठन , संस्था या देश आदि का नेतृत्व करना सुगम एवं सहज नहीं होता है , फिर संकट के समय तो नेतृत्व की बात ही अलग है। कहते हैं प्रतिकूल परिस्थिति व संकट के समय ही नेतृत्व की परीक्षा होती है । कहा गया है कि –

वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या,
जिस पथ पर बिखरे शूल न हों।
नाविक की धैर्य कुशलता क्या ,
जब धाराएं प्रतिकूल न हों।।

इसके साथ यह भी सच है कि जो नेतृत्व संकट के समय धैर्य खो देता है , वह बिखर जाता है तथा जो धैर्य धारण कर संकट की अग्नि में तपता है , वह निखर कर सफलता का मार्ग प्रशस्त करता है।

संकट के समय नेतृत्व त्याग एवं धैर्य धारण कर कर्मठता एवं पुरुषार्थ की मिसाल प्रस्तुत करता है ताकि लोग उससे ऊर्जा लेकर चुनौतियों का मुकाबला कर सके । गीता में कहा गया है –

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जन: । स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।

अर्थात् श्रेष्ठ पुरूष जो जो आचरण करता है , अन्य पुरूष भी वैसा – वैसा ही आचरण करते हैं। वह जो कुछ प्रमाण कर देता है , समस्त मनुष्य समुदाय उसी के अनुसार बरतने लग जाता है।

संकटकाल में चुनौतियों से घबराकर टीम में बिखराव की संभावना भी बढ़ सकती है। टीम का मनोबल गिर सकता है। ऐसी स्थिति में नेतृत्व खुद को आगे कर दायित्व के साथ टीम में साहस का संचार करता है । वह टीम को बिखराव से बचाता है तथा पुरुषार्थ से अंधकार को चीरकर सफलता का प्रकाश लाता है।

संकटकाल में नेतृत्व को सावधानीपूर्वक सही निर्णय लेना होता है तथा लिए हुए निर्णय को सच एवं सार्थक करना होता है। यूँ तो निर्णयन प्रक्रिया में टीम की सहभागिता से निर्णय का कार्यान्वयन प्रभावी होता है , पर आपातकाल में कभी कभी टीम को व्यापक रुप से निर्णय प्रक्रिया में भागीदार बनाना एवं उससे परामर्श लेना संभव नहीं हो पाता है। नेतृत्व को स्वयं निर्णय लेना होता है। ऐसी स्थिति में निर्णय तो नेतृत्व का होता है ,किंतु उसे इस प्रकार लिया जाता है एवं इस प्रकार पेश किया जाता है कि टीम एवं लोगों को लगे कि निर्णय उनका ही है तथा प्रासंगिक है । नेतृत्व निर्णय लेने के साथ- साथ उसका दायित्व भी लेता है। ऐसा होने पर नेतृत्व का

निर्णय लोगों का अपना निर्णय हो जाता है। ऐसे निर्णय के पालन में लोगों की भागीदारी स्वत: बढ़ती है। निर्णय का कार्यान्वयन प्रभावी होता है तथा सफलता की संभावना बढ़ जाती है। वर्तमान कोरोना संकट के दौरान भारत के माननीय प्रधानमंत्री के आह्वान पर 22 मार्च 2020 को लगाए गए जनता कर्फ्यू की सफलता इसी संदर्भ में नेतृत्व की उत्कृष्टता को परिलक्षित करती है। टीम में हर सदस्य की भूमिका एक जैसी तथा एक स्तर की नहीं हो सकती है। पारखी नेतृत्व हर सदस्यों की अंतर्निहित क्षमता की पहचान कर उन्हें तदनुरूप दायित्व सौंपता है ताकि संगठन को उसका पूरा पूरा लाभ मिल सके। नेतृत्व का यह भी एक निकष है कि वह उपलब्ध संसाधनों का किस प्रकार इष्टतम सदुपयोग कर सकता है। कहा गया है –

अमंत्रं अक्षरं नास्ति , नास्ति मूलं अनौषध: । अयोग्य पुरुष: नास्ति ,योजक: तत्र दुर्लभ: ।।

अर्थात् संसार में कोई ऐसा अक्षर नहीं, जो मंत्र न है , कोई ऐसा मूल नहीं ,जो किसी रोग की औषधि नहीं है तथा दुनिया में कोई भी पूर्णत: अयोग्य नहीं है ,जो किसी काम न आ सके ,किंतु तीनों का समुचित प्रयोग करने वाला योजक कठिनता से मिलते हैं। ऐसे कुशल योजक ही संकट के दौरान सफल नेतृत्व कर पाते हैं।

संकट के समय लिए गए निर्णय की आलोचना भी हो सकती है। यह संभव है उसमें कोई चूक हो ,पर आलोचना से विचलित नहीं होना श्रेष्ठ नेतृत्व की पहचान है। निर्णय की आलोचनाओं का स्वागत किया जाना चाहिए एवं उपयुक्त जान पड़ने पर तत्काल सुधार भी करना चाहिए ,किंतु उससे घबराना नहीं चाहिए। इस संबंध में किसी महापुरुष का यह कथन अत्यन्त प्रासंगिक है –

"उन सारे पत्थरों को अपने पास रख लें ,जिसे लोग आप पर फेंकते हैं और आप उन पत्थरों का प्रयोग एक मजबूत स्मारक बनाने में करें।"

संकट काल में कुशल नेतृत्व के संबंध में डेविड जे बॉघम ने कहा है –

एक मार्गदर्शक को अनिवार्य रुप से आगे बढ़कर नेतृत्व करना चाहिए ,जहां दूसरे बाधाएं देखते हैं,वहां उन्हें अवसरों को देखना चाहिए। जहां दूसरे मुश्किलें देखते हों, वहां उसे अवश्य ही संभावनाओं को देखना चाहिए। सभ्यता किसी निषेध पर नहीं,बल्कि एक सकारात्मक निश्चय के आधार पर बनती है । आशाजनक एवं उज्ज्वल संभावनाओं का एक संकल्प है कि भविष्य उन लोगों के लिए है ,जो उन्हें पाने के लिए परम पुरुषार्थ कर रहे हैं।

समर्थ नेतृत्व संकट के समय अपनी टीम की अंतर्निहित शक्ति की पहचान कर उसे जागृत करता है । बिखरी शक्तियों को एकजुट कर प्राणवंत बनाता है। वास्तव में कुशल नेतृत्व टीम की जागृत शक्तियों के समुच्चय का प्रतिबिंब है।

इतिहास इसका साक्षी रहा है कि कुशल नेतृत्व की बदौलत न केवल संकट का समाधान हुआ है ,बल्कि संकटों को अवसरों में बदलकर नया इतिहास रचा गया है। समय की धारा को परिवर्तित किया गया है। आपदा को अवसर में बदलना नेतृत्व का करिश्मा होता है। कोरोना महामारी आपदा के इस घोर संकट को भी सक्षम नेतृत्व ने अवसरों में बदलने का मार्ग प्रशस्त किया है - आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का , स्थानीय व स्वदेशी उत्पादों की ओर मुड़ने का एवं स्वाबलंबन तथा नवोन्मेष की ओर उन्मुख व अग्रसर होने का।

संकट के दौरान नेतृत्व की कुशलता का प्रमाण हमारे बैंक में भी मिल रहे हैं। शीर्ष प्रबंध तंत्र के कुशल नेतृत्व के मार्गदर्शन एवं यूको जनों की साधना से बैंक ने लगातार 17 तिमाहियों के बाद मार्च 2020 तिमाही में पहली बार लाभ अर्जित किया। इतना ही नहीं प्रभावी नेतृत्व के बल पर कोरोना महामारी की आपदा को झेलते हुए बैंक ने जून ,2020 तिमाही में भी बेहतर प्रदर्शन जारी रखा। नेतृत्व न केवल लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर करता है , बल्कि उसे सशक्त भी बनाता है। उसमें विश्वास भी भरता है। इतना ही नहीं सच्चा नेतृत्व असफलता का दायित्व खुद लेता है तथा सफलता का श्रेय अंतर्मन से टीम को देता है ।

इस संबंध में मिसाइल मैन एवं पूर्व राष्ट्रपति डॉ एपीजे अब्दुल कलाम तथा प्रो. सतीश धवन के चर्चित प्रेरक प्रसंग उल्लेखनीय हैं –

डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम एसएलवी मिशन के परियोजना निदेशक थे और प्रो. सतीश धवन उस समय इसरो के

अध्यक्ष थे। यह पहला मौका था जब भारत श्री हरिकोटा में अपना रॉकेट लॉन्च वाहन बना रहा था। दस साल के कठिन संघर्ष के बाद वे अगस्त 1979 को अपना पहला प्रायोगिक रॉकेट 'रोहिणी टेक्नोलॉजी पेलोड'लॉन्च करने के लिए तैयार थे।

काउंटडाउन शुरू हो गया और डॉ अब्दुल कलाम ने छह अन्य विशेषज्ञों के साथ प्रक्षेपण की उत्सुकता से निगरानी की। उपग्रह प्रक्षेपण से चार मिनट पहले, कंप्यूटर का उन वस्तुओं की चेकलिस्ट से गुजरना शुरू हुआ, जिन्हें जांचना आवश्यक था। एक मिनट बाद कंप्यूटर प्रोग्राम ने लॉन्च को रोक दिया। पता चला कि कुछ नियंत्रण घटक क्रम में नहीं थे। हर कोई यह नहीं जानता था कि आगे बढ़ना है या नहीं। पूरे देश को खुशखबरी का इंतजार था। विशेषज्ञों ने डॉ. अब्दुल कलाम को लॉन्च के साथ आगे बढ़ने की सलाह दी और वे अपनी गणना के बारे में आश्वस्त थे। यह निर्णय डॉ. कलाम को लेना था और उन्होंने कंप्यूटर को बायपास कर मैनुअल मोड में स्विच करने और रॉकेट लॉन्च करने का निर्णय लिया। पहले चरण में सब कुछ ठीक काम किया। दूसरे चरण में एक समस्या विकसित हुई। उपग्रह के कक्षा में जाने के बजाय पूरा रॉकेट सिस्टम बंगाल की खाड़ी में गिर गया। यह एक बड़ी विफलता थी।

पूरी दुनिया प्रेस मीट को जानने के लिए उत्सुक थी कि क्या हुआ था ? डॉ. कलाम मीडिया का सामना करने और लाखों लोगों के पैसे बर्बाद करने की उनकी आलोचना का जवाब देने से बहुत भयभीत थे। इसरो के चेयरमैन प्रो.सतीश धवन प्रेस से स्वयं मुखातिब हुए और उन्होंने टीम की विफलता के लिए अपने ऊपर दोष लिया और कहा "हम असफल रहे लेकिन मुझे अपनी टीम पर बहुत अच्छा भरोसा है कि अगली बार हम निश्चित रूप से सफल होंगे "और टीम में सभी को विश्वास दिलाया। अगले साल जुलाई 1980 में डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के नेतृत्व में उसी टीम ने सफलतापूर्वक रोहिणी आरएस -1 को कक्षा में लॉन्च किया। लॉन्च की सफलता पर पूरा देश गर्व और जयकार कर रहा था।

प्रो.सतीश धवन ने डॉ.कलाम और टीम को बधाई दी और डॉ. कलाम से उस दिन प्रेस कॉन्फ्रेंस करने को कहा। बाकी इतिहास में क्या हुआ, हम सब जानते हैं।

डॉ. कलाम ने कई और सफल प्रक्षेपणों का नेतृत्व किया और भारत के 'मिसाइल मैन' बने।

प्रो. सतीश धवन ने असफलता के दिन जो किया उसके बिना ऐसा नहीं होता। यह बताता कि नेतृत्व क्या है तथा संकट के समय इसकी क्या भूमिका होती है। नेतृत्व किसी कार्य को प्राप्त करने के लिए किसी को प्रेरित करना मात्र नहीं है, बल्कि यह किसी को और अधिक महान लक्ष्य प्राप्त करने के लिए 'सशक्त' बनाना है। प्रो.धवन ने अपनी टीम में जो विश्वास रखा था और असफल होने पर स्वयं जिम्मेदारी का जो बोझ लिया, कुछ ऐसा है जिसे हर किसी को देखना चाहिए और एक सच्चा नेतृत्व बनने के लिए सीखना चाहिए।

****

राजभाषा अधिनियम,1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी होने वाले कागजातों की सूची

1. सामान्य आदेश 2. अधिसूचनाएं 3. प्रेस विज्ञप्तियाँ 4. संविदाएं 5. करार 6. लाइसेंस 7. परमिट 8. नोटिस 9. टेंडर के फार्म 10. संकल्प 11. नियम 12.संसद के एक सदन में या दोनों सदनों में प्रस्तुत सरकारी – पत्र (रिपोर्टों के अलावा) 13. संसद के एक सदन में या दोनों सदनों में प्रस्तुत प्रशासनिक व अन्य रिपोर्टें 14. प्रशासनिक या अन्य रिपोर्ट (संसद के एक सदन या दोनो सदनों में प्रस्तुत की गई रिपोर्टों के अलावा)

कोविड -19 का सामाजिक -आर्थिक परिदृश्य पर प्रभाव

जीतेंद्र कुमार
मुख्य प्रबंधक
बैलाडीला शाखा

हमारा जीवन भी नदी की धारा के समान है। आज जिसकी गति कोरोना महामारी आपदा से टकराकर मंथर तो हो ही गई है , पर वह दु:ख दर्द को अपनी आंचल में समेटकर आगे बढ़ रही है। आज इसे भी अपनी राह बदलनी पड़ रही है। कई चरणों के लॉकडाउन के बाद अनलॉक से आरंभ गतिविधियों का मानों यही सार है ।

दिसंबर 2019 में चीन के वुहान शहर में उत्पन्न यह कोरोना वायरस (कोविड- 19) लगभग संपूर्ण विश्व में फैल चुका है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे वैश्विक महामारी घोषित किया है। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार यह संक्रमित व्यक्ति या वस्तु के संपर्क में आने से फैलता है,जो ऊपरी सांस या श्वसन तंत्र को प्रभावित करता है। वृद्ध ,बच्चे एवं अन्य जटिल रोगों से ग्रसित लोग,जिनकी प्रतिरोधक क्षमता कम है, में संक्रमण की संभावना अधिक है ।

इस वायरस की ताण्डव लीला से 09 जून,2020 तक विश्व में 72.62 लाख लोग संक्रमित हो चुके हैं ,4.11 लाख लोग काल कलवित हो गए हैं ,जबकि 35.90 लाख लोग स्वस्थ भी हो गए हैं। भारत में संक्रमित, मरने एवं स्वस्थ होने वाले की संख्या क्रमश: 2.65 लाख ,7710 एवं 1.33 लाख है।

इस वायरस की विध्वंसक शक्ति ने मानव को उसकी औकात बता दी है। अंतरिक्ष एवं मंगल ग्रह पर जीवन की खोज करने वाले मानव को इसने घरों में कैद कर दिया। अब तक विशिष्ट परिभाषित चिकित्सा उपलब्ध नहीं होने के कारण इसकी विनाश लीला से बचने के लिए एहतिहाती उपाय यथा प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि, सामाजिक दूरी का पालन , चेहरा ,नाक व मुंह आदि ढ़कने के लिए मास्क के प्रयोग, न्यूनतम 20 सैंकेंड तक हैंडवाश या साबुन पानी से हाथ धोने एवं सैनिटाइजर के प्रयोग , भीड़ एवं भौतिक स्पर्श से बचने आदि सुरक्षात्मक पहलूओं पर अधिक ध्यान केंद्रित किया गया। इसी के तहत भारत में भी विभिन्न चरणों में लॉकडाउन भी लगाया गया।

जिस रोग से बचने के लिए छूना मना है ,समूह का संपर्क त्याज्य हो जाए , हर व्यक्ति व वस्तु में कोरोना का भय हो तो इसका प्रभाव कितना घातक हो सकता है , इसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता है। इस महामारी ने जीवन के समग्र पहलूओं पर असीमित प्रभाव डाला है। इसके प्रकोप से विश्व व्यवस्था व्यापक परिवर्तन की दौर से गुजर रही है। इन परिवर्तनों की व्यापकता सामाजिक , आर्थिक ,राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जैसे सभी क्षेत्रों तक है। इसका प्रभाव इतना गहरा है कि सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में न केवल बदलाव फलीभूत हुए, अपितु कई बदलावों की पृष्ठभूमि भी तैयार हुई है। इसने जीवन के मायने को नए ढंग से परिभाषित किया है। इस महामारी ने हमारे रहन सहन , खान -पान के तौर तरीकों से लेकर शिक्षा ,चिकित्सा , व्यापार व अर्थजगत में नई पद्धतियों एवं व्यवस्थाओं के सृजन का बीजारोपण किया है, जिसका आधार है -

बिना स्पर्श या कम स्पर्श एवं संपर्कविहीन प्रणाली या पद्धति

सामाजिक परिदृश्य में बदलाव

पारिवारिक माहौल : भागदौड़ की जिंदगी में अपने परिवार एवं आत्मीय स्वजनों के लिए समय निकालना पहले कठिन होता था ,किंतु लॉकडाउन में यह संभव हो सका। भौतिकवादी जिंदगी में विश्रांति का सुखद

अनुभव मिला । परिवार का साथ मिला । पारिवारिक सत्संग से आनंद की अनुभूति हुई । आपसी समझ से पारिवारिक संबंधों में मजबूती आई है। आत्मीयता की डाल फिर से हरी हो गई है। पारिवारिक कार्यों में सभी ने हाथ बंटाकर मन को हल्का किया है। छोटे- छोटे कार्यों के लिए दूसरे लोगों व नौकरों पर आत्मनिर्भरता कम हुई है। कैरियर एवं व्यावसायिक सफलता के चलते पारिवारिक संवेदनाओं पर ध्यान नहीं देने वालों को लॉकडाउन ने उनकी भूलों का एहसास कराया है। हमें यह सीख मिली है कि सुख एवं शांति आकर्षण एवं उपलब्धि में नहीं, बल्कि आत्मीयता , त्याग तथा सौहार्द व समन्वय में निहित है। देश अनलॉक हो गया है , फिर से जिंदगी शुरू हो गई है। रफ्तार भी पकड़ लेगी , किंतु यदि हम उन दिनों के आनंद की अनुभूति कर उसी प्रकार जीने के लिए सजग रहें तो हमारी उपलब्धि होगी।

जीवन शैली में परिवर्तन : कोरोना महामारी आपदा के कारण जीवन शैली में बदलाव हो रहे हैं। जीवन में स्वच्छता का महत्व बढ़ा है। आदतों में परिवर्तन हुआ है। ऐसे परिधानों के प्रयोग बढ़े हैं,जिससे शरीर अधिक ढ़का रहता है। मुख, नाक एवं चेहरे को ढ़कने के लिए मास्क परिधान में शामिल हो गया है।

घर से बाहर जूते चप्पल उतारना , बाहर ही हाथ – पैर धोना एवं फिर घर में प्रवेश जैसी प्राचीन परम्पराएं व आदतें अब हमारी अनिवार्यता हो रही हैं। इसे देखते हुए देश के कई नामी बिल्डरों व कंपनियों ने नए प्रोजेक्ट में कोरोना के चलते आए बदलाव के आधार पर डिजाइन तैयार कर रहे हैं ,जिसमें इन सभी चीजों के साथ - साथ घर में कार्यालय का कार्य करने के लिए अलग कमरे की व्यवस्था भी शामिल है।

लोग घर के भोजन को प्राथमिकता देने लगे हैं। होटल या स्ट्रीट भोजन के प्रति लोगों में भय है। पौष्टिक आहार के प्रति आकर्षण बढ़ा है।

स्वस्थ जीवनचर्या व प्रतिरोधक क्षमता की वृद्धि के लिए योग ,प्राणायाम , आयुर्वेद आदि के प्रति रुझान अधिक हुआ है। विलासिता एवं कृत्रिम आवश्यकताओं से मान भंग हुआ है। अभिवादन एवं स्वागत के लिए लोग हाथ मिलाने ,गले मिलने आदि को छोड़कर 'नमस्ते' की भारतीय शैली पुन: अपनाने लगे हैं। सामाजिक समारोह व विवाह आदि अन्य संस्कार व कार्यक्रम धूमधाम की जगह सादगी से संपन्न हो रहे हैं। बाह्य आडंबर कम है , फलत: खर्चों का बोझ भी कम है। ऐसे कार्यक्रमों में तकनीक एवं प्रौद्योगिकी की पैठ अधिक हुई है। वेब आधारित कार्यक्रमों में वृद्धि हुई है। शिक्षण संस्थान ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा की व्यवस्था कर रहे हैं।

अब सार्वजनिक स्थल यथा मंदिर ,पर्यटक स्थल , खेल का मैदान , होटल आदि भी खुलने लगे हैं ,किंतु सामाजिक दूरी एवं स्पर्श रहित मानक के अनुपालन के लिए आवश्यक दिशानिर्देश जारी किए गए हैं।

पर्यावरण की शुद्धता : कोरोना के कारण जितनी भी मौतें हुई हों ,जितने भी कष्ट ,दु:ख एवं संकट आए हों, किंतु देश के पर्यावरण को लॉकडाउन की दुआएं भी मिली हैं। शांति और नीरवता का आलम है। प्रदूषण का धुंआ नहीं है, आसमान साफ दिखाई देता है । जल से गंदगी गायब है । स्वच्छता की धारा बह रही है। चिड़िया चहचहाने लगी । कई नई- नई वनस्पतियां खिलने लगीं । लुप्तप्राय पुष्प महकने लगे । प्रकृति का सौंदर्य निखरने लगा। वायुमंडल की स्वच्छता के कारण ही जालंधर, सीतामढ़ी एवं सहारनपुर से हिमालय की हिमाच्छादित चोटियों की सुंदरता के दर्शन होने लगे। गंगा की डॉल्फिन मेरठ तथा हुगली तक में देखी गई। विशेषज्ञों के अनुसार गंगा में पहली बार 'बैक्टोरियो फेज' नामक सूक्ष्म जीव बढ़ गए हैं, जो पानी को सड़ने नहीं देते हैं। लॉकडाउन के दौरान देश की आबोहवा में 44 % तक सुधार हुआ , जहरीली गैसें कम हुई , ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ी। नासा की सेटेलाइट तस्वीरों से जानकारी मिली है कि लॉकडाउन के बीच हवा में एरोसॉल की मात्रा 20 वर्षों में सबसे कम पाई गई। केंद्रीय प्रदूषण बोर्ड ने 16 मार्च से 15 अप्रैल 2020 तक के आंकड़ों के आधार पर बताया है कि देश के 115 शहरों में से 92 शहरों की हवा मानक एवं इससे अधिक स्तर पर थी ,जबकि लॉकडाउन के पूर्व सिर्फ 50 शहरों की थी।

विश्लेषकों के अनुसार दुनिया के प्रदूषण में 40 % की कमी आई। ग्लोबल कार्बन प्रोजेक्ट के अनुसार इस वर्ष कार्बन उत्सर्जन में 5 % से ज्यादा कमी के संकेत मिलने लगे हैं। इंटरनेशनल क्लाईमेट रिसर्च के अनुसार फरवरी में वायु प्रदूषण में 30 % की गिरावट देखी गई। एक अध्ययन के अनुसार पर्यावरण का यह स्तर भी कायम रहने पर वर्ष में लाखों लोगों की जान बचाई जा सकती

है।

प्राकृतिक सौंदर्य के अद्भुत एवं जीवंत नजारे को देखकर ऐसा लगा कि -

मौत के डर से ही सही जिंदगी को फुर्सत तो मिली
सड़कों को राहत घरों को रौनक तो मिली ।
छतों से ही सही आसमान की रंगत तो दिखी
रफ्तार थामकर ही सही जिंदगी के लिए जंग तो लड़ी ॥

इसका दूसरा पहलू यह भी है कि अब कोरोना के कारण मास्क ,पीपीई किट , गल्व्स व अन्य चिकित्सकीय उपकरणों के अवशिष्टों से प्लास्टिक एवं अन्य प्रदूषणों का खतरा बढ़ गया है । इसके समुचित प्रबंधन की आवश्यकता होगी।

फिर से आर्थिक एवं अन्य गतिविधियां आरंभ हो गई है। सचमुच पर्यावरणीय समस्या का यह अल्पकालिक सुधार स्थायी समाधान नहीं है। किसी भी महामारी के फौरन बाद आर्थिक विकास की रफ्तार को बढ़ावा देने के लिए प्राकृतिक संसाधनों को ध्यान में रखकर मानव, प्रकृति एवं आर्थिक विकास के अंतर्संबंधों को नए सिरे से परिभाषित करने की आवश्यकता होती है । इस समय अधिक सजगता की अपेक्षा है , यह पर्यावरण के प्रति कोरोना का संदेश है।

इसके अलावा लॉकडाउन के दौरान सामाजिक अपराधों व सड़क दुर्घटनों में कमी जैसे कई अन्य भी सकारात्मक बदलाव आए हैं।

लॉकडाउन के दौरान लोगों का आना - जाना , मिलना - जुलना कम हो गया। बच्चों का दोस्तों से मिलना एवं खेलना बंद हो गया। खिलाड़ियों का अभ्यास छूट गया। इससे उन्हें मानसिक परेशानियां झेलनी पड़ी है। बच्चे चिड़चिड़े होने लगे हैं। कई लोग अवसाद के भी शिकार हो गए हैं। सामाजिक दूरी के मानक के पालन एवं मास्क आदि प्रयोग के फलस्वरुप दृष्टिबाधित,श्रवणबाधित व्यक्तियों को जीवन में अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा । कोरोना के कारण ऐसे व्यक्ति, जो हृदय, किडनी ,कैंसर आदि घातक रोगों से ग्रस्त हैं , उनका इलाज नहीं हो सका।

कोरोना महामारी भारतीय समाज में गरीबी – अमीरी के बीच बढ़ती खाई को भी बेनकाब किया है। काम से निकाले गए उन श्रम देवता मजदूरों ,जो लॉकडाउन में फंसे थे , उन्हें भूखे प्यासे सैंकडों किलोमीटर पैदल चलकर घर वापसी के लिए बिलखते तथा प्राण गंवाते भारत ने देखा है। जिसके पास स्मार्ट फोन या लेपटॉप या इंटरनेट कनेक्टिविटी नहीं हैं , गांव के ऐसे बच्चों को 'ई शिक्षा' से वंचित होते भारत ने देखा है। जिसके पास घर नहीं है , छोटी झोपड़ी में 5-10 सदस्यों वाले परिवारों को सामाजिक भौतिक दूरी मानक का पालन नहीं कर पाने की विवशता को भारत ने देखा है। ये कुछ हालात हैं, जिस पर चिंतन करने के लिए हमें बाध्य किया है।

फिर भी कोरोना के फलस्वरुप व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में जो बदलाव हुए हैं ,वे काफी महत्वपूर्ण हैं। गौर से अध्ययन करने पर यह पता चलता है कि इन परिवर्तनों का मुख्य आधार मानव व्यवहार है तथा इसे सकारात्मक रुप में स्थायित्व प्रदान किया जा सकता है। सामाजिक बदलाव एवं मानवीय व्यवहार परिवर्तन के लिए व्यावहारिक अर्थशास्त्र ,जिस पर अर्थशास्त्री रिचर्ड थेलर को वर्ष 2017 का नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ है , पर बल दिया जा सकता है। इसके अनुसार मनुष्य के व्यवहार मुख्यत: समाज एवं उसके द्वारा बनाए गए नियमों द्वारा अधिक प्रभावित होते हैं। भारत में सामाजिक एवं धार्मिक नियम लोगों के व्यवहार परिवर्तन में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं । इसके अलावा व्यवहार विज्ञान की उस संकल्पना ,जिसमें बिना दबाव के तथा सकारात्मक निर्देशों एवं परोक्ष सुझावों द्वारा लोगों को वांछनीय तथा लाभकारी व्यवहार अपनाने हेतु प्रेरित किया जाता है ,का उपयोग किया जा सकता है। स्वास्थ्य संबंधी मामलों में हेल्थ बिलीफ मॉडल (व्यवहार में परिवर्तन कर स्वयं को कई बीमारियों से बचाया जा सकता है) की प्रभावी भूमिका हो सकती है।

आर्थिक परिदृश्य में बदलाव

कोरोना महामारी आपदा के कारण विश्व सहित भारत की अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ा है। पहले से सुस्त पड़ी भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास दर को गहरा धक्का लगा है। इसके कारण विनिर्माण , एमएसएमई , परिवहन

क्षेत्रों पर काफी बुरा असर पड़ रहा है। देश में विनिर्माण क्षेत्र में 21 %एवं औद्योगिक उत्पादन में 17% तक की कमी आई है।

सेंटर ऑफ मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी की रिपोर्ट के अनुसार 31 मई 2020 को समाप्त सप्ताह में भारत में बेरोजगारी की दर 23.48 % पर पहुँच गई है। लॉकडाउन की वजह से देश के 12.70 करोड़ लोगों को नौकरी से हाथ धोना पड़ा है। इसका अधिकतम प्रभाव असंगठित लोगों के रोजगार पर पड़ा है ,जो कुल वर्क फोर्स का लगभग 90% है। एक राज्य से दूसरे राज्य में काम के लिए पलायन करने वाले लगभग 1.4 करोड़ लोग हैं।

खाद्य मंहगाई दर 8 .6 % पर पहुँच गई है। बचत एवं खपत में काफी कमी आई है। सरकार का राजकोषीय घाटा अनुमानित सीमा को पार कर चुका है। बाजार में तरलता की कमी हो गई है।

वित्तीय वर्ष 2024-25 तक 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के महत्वाकांक्षी लक्ष्य पर मानों पानी फिर गया है। भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास दर नकारात्मक होने की आशंका जताई जा रही है। चौतरफा गिरती अर्थव्यवस्था के कारण प्रसिद्ध रेंटिंग एजेंसी मुडीज ने अर्थव्यस्था की रेटिंग बीएए2 से गिराकर बीएए3 कर दी है।

अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए देश को अनलॉक कर प्रतिबंधों एवं नियमों के साथ आर्थिक एवं वाणिज्यिक गतिविधियां आरंभ कर दी गई हैं, किंतु अभी भी कोरोना का भय व्याप्त है । अत: उचित सतर्कता एवं नियमों का पालन लाजिमी है । हमें कोरोना के साथ कदमताल मिलाना होगा और जीवन को आगे बढ़ाना होगा। सामाजिक दूरी व स्पर्श रहित मानक के मद्देनजर आर्थिक जगत की गतिविधियों में बदलाव आए हैं। लेन – देन की ऐसी स्थिति से बचने का प्रयास किया जाएगा, जिसमें स्पर्श की संभावना कम रहेगी । अर्थव्यवस्था की स्थिति सुधारने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक एवं केंद्र सरकार ने महत्वपूर्ण प्रयास किए हैं। बाजार में तरलता तथा मांग में वृद्धि एवं मजबूती के लिए भारतीय रिजर्व बैंक के विभिन्न उपायों में रेपो दर में कमी , ऋण किस्त की चुकौती के लिए 6 माह की अधिस्थगन अवधि देना, बासैल III मानकों को लागू करने की समय सीमा में वृद्धि करना , केपिटल कंजर्वेशन फंड संबंधी समय सीमा 31 मार्च से बढ़ाकर 30 सितंबर तक किया जाना आदि मुख्यत: शामिल हैं ,वहीं केंद्र सरकार ने आपदा की इस घड़ी में 20 लाख करोड़ रु. के विशेष आर्थिक एवं समावेशी पैकज की घोषणा की, जो जीडीपी का लगभग 10 % है। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के अंतर्गत 1.70 लाख करोड़ के राहत पैकेज का लाभ दिया गया है।

कार्यक्षेत्र की नई संकल्पना – वर्क फ्रॉम होम :

कोविड -19 ने कार्यालय या कार्यक्षेत्र के संबंध में हमारे विचार एवं अवधारणों को बदल दिया है। ट्विटर ने हाल में घोषणा की है कि वह अपने सभी कर्मचारियों को स्थायी रुप से काम करने की इजाजत देने पर विचार कर रहा है। टीसीएस ने कहा कि 2025 से कंपनी के 75 % कर्मचारी घर से ही काम करेंगे । भारत में भी निजी, सार्वजनिक क्षेत्र तथा सरकारी कार्यालय ‘वर्क फ्रॉम होम’ को भविष्य के कार्यालय की तरह देख रहे हैं। बेहतर तकनीकी सुविधाओं की उपलब्धता , कम खर्चीली पद्धति , घर एवं कार्य दोनों दृष्टि से लचीली व्यवस्था आदि अनेक विशिष्टताओं के कारण यह संकल्पना आकर्षण का केंद्र बन सकती है ,लेकिन इस संबंध में निर्णय लेते समय इसके दुष्प्रभावों पर भी गौर करने की आवश्यकता होगी तथा इसके लिए कोड व प्रोटोकॉल आदि बनाना जरुरी होगा ,तभी यह व्यवस्था कारगर हो सकती है। संस्था व संगठन काम के मॉडल को लेकर अपनी रणनीति बनाएंगे ,तब शायद अपनी जिंदगी एवं काम के बीच एक बैलेंस वर्क – लाइफ की उम्मीद कर पाएं।

प्रौद्योगिकी एवं नवाचार को प्रोत्साहन : हालांकि वर्तमान समय प्रौद्योगिकी से संचालित है , लेकिन कोरोना महामारी आपदा ने हमें तकनीक के करीब जाने, उसकी क्षमताओं से परिचित होने एवं उसके सदुयोग से कामकाज को सामान्य ढंग से चलाने के लिए विशेष रुप से प्रेरित किया है। अब ई- कॉमर्स को बढ़ावा मिलेगा। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ओटोमेशन एवं रोबोटिक्स का इस्तेमाल अधिक होगा। कार्यालयों में बौद्धिक उपकरणों पर हमारी निर्भरता बढ़ जाएगी। आर्टिफिशयल इंटेलिजेंस के इस्तेमाल की संभावनाएं बढेंगी।

किंतु हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि प्रौद्योगिकी को समावेशी व सर्वसुलभ बनाए बिना हम आगे नहीं बढ़ सकते हैं। सिस्टम में संवेदना नहीं होती है एवं जीवन में

संवेदना महत्वपूर्ण है । अत: सिस्टम एवं संवेदना में समन्वय हमारा इष्ट होना चाहिए।

विभिन्न क्षेत्रों में नवाचार को बढ़ावा दिया जा सकता है एवं बिल्कुल नए ढंग से सोचने वाला समाज गढ़ा जा सकता है। अतीत में भी महामारी ने नवाचार को गति देने का काम किया है। नये विचारों के साथ बदलाव को मुमकिन बनाया है। 2002 में चीन एवं पूर्वी एशियाई देशों में फैले सार्स ने दुनिया बदल दिया था । वैश्विक अर्थव्यवस्था को अरबों डॉलर का नुकसान हुआ था , किंतु इसने अलीबाबा एवं जेडी डॉट कॉम जैसी ई-कॉमर्स कंपनियों को जन्म दिया । इस संकट के दौरान इससे भी बड़ी कंपनी के सृजन का स्वप्न देखना लाजिमी है।

आत्मनिर्भरता एवं स्वावलंबन को प्रोत्साहन : कोरोना संकट के दौरान एक बार पुन: आत्मनिर्भरता एवं स्वावलंबन को प्रमुखता दी जा रही है। लॉकडाउन के दौरान ब्रांड सामानों की कमी के चलते लोगों ने स्थानीय स्तर पर उत्पादित मालों से काम चलाया। इससे स्वदेशी उत्पादों के उपयोग के प्रति लोगों का नजरिया बदला है। केंद्र सरकार द्वारा 20 लाख करोड़ के पैकेज में भी आत्मनिर्भरता पर काफी बल दिया गया है। माननीय प्रधानमंत्री जी ने भी आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का आह्वान किया है। स्वावलंबन के माध्यम से स्थानीय स्तर पर ही लोग स्वरोजगार के माध्यम से अपनी आजीविका के साथ- साथ अर्थव्यवस्था को गति दे सकते हैं । इससे आयात एवं निर्यात के असंतुलन की समस्या भी दूर हो सकती है । आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी भारत का निर्माण नई उपलब्धि होगी ।

सचमुच कोरोना महामारी आपदा ने अभूतपूर्व रुप में प्रभाव डाला है। इसके द्वारा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में महान परिवर्तनों का सृजन हुआ है। सामाजिक – आर्थिक परिदृश्य के बदलाव युगांतकारी होंगे। बदलाव के साथ – साथ कोरोना ने कई महत्वपूर्ण सीख भी दी है। एक नया दृष्टिकोण दिया है – जिंदगी जीने के लिए । इस संकट से मिली सीख को हृदयंगम कर तदनुरुप अपनी जीवन धारा को बदलें तो हमारा पथ प्रशस्त हो सकता है।

सोशल डिस्टेंसिंग एवं स्पर्शहीनता कोरोना संकट से बचने के साधन हैं ,किंतु सामूहिक सहयोग के बिना समाधान भी नहीं मिल सकता है। अत: हमें यह ध्यान रखना जरुरी है कि किसी का हाथ छूना नहीं है , पर किसी का साथ भी नहीं छोड़ना है। सामाजिक दूरी मानक के कारण कहीं अस्पृश्यता की भावना फिर से न आ जाए, इसका भी ध्यान रखना है। अतिथि देवो भव की परंपरा को भी क्षीण नहीं होने देना है ।

इस समय संकट से सीख लेकर परिवर्तनों को सकारात्मक दिशा में मोड़कर एवं समसामयिकता से जोड़कर जीवन को सजाना ही हमारा कर्तव्य होना चाहिए ।

हमें इस कथन को सदैव स्मरण रखना चाहिए –

" अमंगल में भी मंगलमय विभु छिपा रहता है"

सचमुच अनुकूलता भोजन है , प्रतिकूलता विटामिन है एवं चुनौतियां वरदान हैं,जो इसे अनुकूल कर ले वही पुरुषार्थी है।

****

राजभाषा नियम 1976 का नियम 6

राजभाषा अधिनियम,1963 की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसी दस्तावेजें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं।

कोविड काल एवं डिजिटलीकरण

प्रणव कुमार पाणिग्राही
मुख्य प्रबंधक (सुरक्षा)
अंचल कार्यालय, रायपुर

कोरोना महामारी आपदा के कारण हमारे जन – जीवन में व्यापक बदलाव हुए हैं। भौतिक की जगह आभासी दुनिया मानव के लिए कल्याणकारी प्रतीत हो रही है । प्रौद्योगिकी का असीमित प्रभाव बढ़ा है । घर, परिवार ,कार्यालय ,अर्थव्यवस्था ,सामाजिक जीवन, शिक्षा ,साहित्य – संस्कृति हर जगह इसकी पहुँच बढ़ी है। ज्यादातर लोग इसके इतने निकट आ गए हैं कि डिजिटल के साथ संबंध प्रगाढ़ हो गया है । सच तो यह है कि विपदा की इस घड़ी में बहुत कुछ जो सकारात्मक बदलाव हुए हैं, उनमें डिजिटल क्षमता का विस्तार भी एक है। तकनीक के करीब जाना ,उसकी क्षमताओं से परिचित होना एवं उसका प्रयोग कर कुछ हद तक जीवन को सामान्य ढंग से चलाना कोरोना संकट के समय अधिक उजागर हुआ है। ऐसा लगता है कि मानो यदि तकनीक , इंटरनेट आदि न होते हो इस महामारी से निपटने के लिए की जा रही कार्रवाई एवं येन केन प्रकारेण जीवन यापन भी संभव नहीं हो पाता। इसी तकनीक एवं इंटरनेट के फलस्वरुप हम सोशल डिस्टेंसिंग की अनिवार्यता एवं लॉकडाउन के कारण प्रत्यक्ष मुलाकात नहीं होने पर भी हम अपनों से जुड़े रहे । इसके कारण सूचना संप्रेषण , गतिविधियों को व्यवस्थित करने ,जीवन के संचालन में बहुत मदद मिली। माइक्रोसॉफ्ट टूल्स, गूगल मीट्स आदि माध्यमों से बैठकें हो रही हैं । इसी तकनीक के सहारे सेमिनार के स्थान पर वेबिनार हो रहे हैं। ई- कार्यशाला संपन्न हो रही है। ई – निरीक्षण हो रहे हैं। वर्क फ्रॉम होम से कार्यालय के काम निपटाए जा रहे हैं। विद्यालय बंद हैं, लेकिन ऑनलाइन कक्षाओं से शिक्षण कार्य हो रहे हैं। बैंकिंग एवं भुगतान के क्षेत्र में तो पहले से ही डिजिटल सेवाओं का प्रभाव है । लगभग 40 % लेनदेन ऑनलाइन हो रहा है। काम की चीजें घर बैठे प्राप्त हो रही हैं।

कोरोना काल में हमें उन क्षेत्रों में भी सूचना एवं डिजिटल क्रांति के दर्शन हुए ,जहां पहले इसका कम प्रयोग होता था।

विचारक एवं विश्लेषक तो इस दौरान उजागर हुई नई प्रवृत्तियों, नवीन साधन व नई अवधारणों की विशिष्टताओं से इतने अभिभूत हुए हैं कि इसे स्थायी रुप से जारी रखने पर चिंतन मनन कर रहे हैं। विचार विमर्श का दौर चल रहा है। उन्हें लगता है कि कोरोना संकट की समाप्ति के बाद ये हमारे लिए उपयोगी और वरदान साबित होंगे। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि तकनीक एवं प्रौद्योगिकी से मानव जीवन अत्यधिक लाभान्वित हुआ है, किंतु हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि इसका दूसरा पहलू भी है ।

कोरोना काल में डिजिटल विभाजन की गहरी लकीर भी उजागर हुई । इसका लाभ उनको मिला ,जिनके पास डिजिटल साधन जैसे कंप्यूटर ,लैपटॉप, हाइस्पीड कनेक्टिविटी तथा स्मार्ट फोन आदि थे तथा डिजिटल रुप से साक्षर भी थे। यह सुविधा शहरी समृद्ध लोगों के पास है। अत: लॉकडाउन में भी उनका काम चलता रहा।

सड़क पर जो मजदूर थे , उनका क्या हुआ ? उनका काम छिन गया । तकनीक उनके जीवन में उजाला नहीं ला सका । ग्रामीण ,पिछड़े ,गरीब , अशिक्षित लोगों के लिए इसके कोई मायने नहीं रहे । ऐसे लोग डिजिटल उपकरण, बिजली की अनुलब्धता तथा तकनीकी दक्षता एवं ज्ञान के अभाव के चलते इस लाभ से दूर ही रहे। ऐसे करोड़ों छात्र ऑनलाइन शिक्षा के दायरे से बाहर रह गए, जिनके पास इन सुविधाओं का अभाव है।
इस संदर्भ में भाषा की चुनौती को जोड़ लें तो विभाजन की खाई और बढ़ जाती है । उदाहरण के रुप में आज ऑनलाइन पढ़ाई हो रही हैं । विद्यालय द्वारा ऑनलाइन अध्ययन सामग्री भी दी जा रही है । किंतु अधिकतम सामग्री अंग्रेजी में दी जा रही है । ग्रामीण ,पिछड़े एवं आदिवासी एवं गैर अंग्रेजी भाषी छात्रों के लिए इन सामग्रियों की कितनी उपयोगिता होगी ,यह विचार करने योग्य है।

इसके अलावा सोशल मीडिया इस संकट काल में जहां सूचनाओं के माध्यम से लोगों को एक दूसरे के साथ जोड़े रखा ,वहीं इन्हीं माध्यमों से गलत सूचना एवं दुष्प्रचार ने भी जोर पकड़ा । भय एवं नफरत फैलाने वालों को अच्छा मौका मिला,क्योंकि लॉकडाउन के दौरान लोग सोशल मीडिया पर अधिक समय व्यतीत कर रहे थे। एक सर्वेक्षण के अनुसार स्मार्ट फोन पर व्यतीत होने वाला लगभग 50 % समय ऐसी गतिविधियों में संलिप्त है,जिसके माध्यम से गलत एवं गुमराह करने वाली सूचनाएं फैलती हैं। इतना ही नहीं इस तकनीक का दुरुपयोग साइ साइबर अपराधों के लिए भी किया जाता है । यह निश्चय ही तकनीक के प्रयोग का कृष्ण पक्ष है ।

कोरोना संकट ने यह साबित कर दिया है कि तकनीक एवं प्रौद्योगिकी ग्राह्य है ,पर इस समय भारत में डिजिटल खाई बहुत चौड़ी है । इसे पारदर्शी , समावेशी एवं लोकतांत्रिक बनाने की जरुरत है।

इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रौद्योगिकी साधन हो सकती है ,पर साध्य नहीं है। हम ऑनलाइन माध्यम से घर बैठे अपनी जरूरत की चीजें पा सकते है। कोई सामान खरीद सकते हैं,लेकिन इसके लिए पहले उस सामान का उत्पादन आवश्यक है। सामान खरीदने के लिए हम ऑनलाइन भुगतान कर सकते हैं ,लेकिन इसके साथ धन का होना आवश्यक है और यह उद्यम एवं कर्म से ही संभव हो सकता है। कहने का आशय है कि डिजिटल का कृत्रिम प्रकाश विकास का आभास जरूर कराता है लेकिन वास्तविक प्रगति जमीन से जुड़कर ही होती है । मानवीय संवेदना के बिना प्रौद्योगिकी अर्थहीन हो जाती है।

****

पृष्ठ सं. 34 का शेषांश (बचपन कविता)

न सुबह की कोई खबर थी
न शाम का कोई ठिकाना था
भोली सी मुस्कान और प्यारी सी नादानी थी
न कोई शिकन न कोई परेशानी थी
हर पल मस्ती के लिए बहाना था
न कोई बंधन न जिम्मेदारी का झमेला था
सचमुच पल बचपन का अनमोल था।
बचपन में जवानी एक सपना था
जब जवान हुए बचपन एक जमाना था
चाहत होती चाँद पाने की
पर दिल तितली का दीवाना था
बचपन एक प्यारा सा एहसास है
तमन्ना तो आज भी यही है
हर उम्र में बचपन जिंदा रहे,क्योंकि
पल बचपन का अनमोल है।

कोरोना महामारी आपदा का प्रभाव

प्रदीप कुमार उपाध्याय
प्रबंधक (विधि)
अंचल कार्यालय, रायपुर

कोरोना वायरस के संक्रमण की प्रकृति , बढ़ते मामले एवं लॉकडाउन के कारण विश्व का वैयक्तिक ,सामाजिक एवं आर्थिक जीवन अत्यधिक प्रभावित हुआ है । लॉकडाउन के फलस्वरुप सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधियां ठप हो गई हैं । विश्व की आर्थिक स्थिति चरमरा गई है । बेरोजगारी का संकट उत्पन्न हो गया है । इसका भारत के भी समग्र जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ा एवं सामाजिक एवं आर्थिक परिदृश्य में महत्वूर्ण बदलाव भी हुए हैं।

कोरोना महामारी के फलस्वरुप सामाजिक एवं आर्थिक परिदृश्य में काफी बदलाव देखने को मिले हैं एवं इसमें और भी बदलाव होंगे ,जिसे आत्मसात् करना हमारी जिंदगी के लिए अनिवार्य होंगे । कोरोना महामारी के बाद लोगों की जिंदगी ही बदल गई।

जीवन शैली : सामाजिक भौतिक दूरी (सोशल डिस्टेंसिंग) कोरोना काल की उपज है । कोरोना के संक्रमण की रोकथाम के लिए अन्य उपायों के साथ – साथ सामाजिक भौतिक दूरी का पालन , मास्क, सैनिटाइजर ,गलव्स आदि का उपयोग , बारंबार साबुन पानी से हाथ धोना आदि हमारी दिनचर्या के अंग बन गए हैं। मास्क भी अनिवार्य परिधान की श्रेणी आ गया है । अभिवादन के लिए 'हाथ मिलाने' की पाश्चात्य शैली हाथ जोड़कर 'नमस्ते' की भारतीय संस्कृति में परिवर्तित हो गई है। नई परिस्थिति के अनुसार जीवन शैली में और भी बदलाव होंगे।

स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के लिए जीवनचर्या पर जोर

कोरोना महामारी आपदा ने लोगों को वास्तव में स्वच्छता का महत्व समझाया है। अब लोग संक्रमण से बचने के लिए अपने हाथ बार बार साबुन – पानी या हैंडवाश से धोते हैं एवं सार्वजनिक स्थान से वापस आने पर शरीर एवं कपड़े की सफाई करते हैं। वे अपने घर और आस पास की भी सफाई करने पर ध्यान देने लगे हैं। हाल ही में भारत सरकार ने देश में सार्वजनिक स्थानों पर थूकने को अपराध की श्रेणी में रखा , जिसका उल्लंघन करने पर सजा एवं जुर्माने का भी प्रावधन किया गया है । देश में सड़कें, मैदान एवं अन्य स्थानों की स्वच्छता में वृद्धि से स्पष्ट है कि कोरोना महामारी आपदा ने लोगों में स्वच्छता के लिए सजगता बढ़ाई है। 'स्वच्छ भारत अभियान' प्रभावी होने लगा है। व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में आए इस सकारात्मक बदलाव को आगे बढ़ाना हमारे लिए श्रेयस्कर होगा। खान – पान, रहन सहन में भारतीय पद्धति की प्रबलता बढ़ी है । कोरोना से बचाव हेतु प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए आयुर्वेद, योग, प्राणायाम आदि के प्रति लोग का रुझान बढ़ रहा है। स्वास्थ्य के प्रति यह जागरूकता परिवर्तनकारी हो सकती है।

पारिवारिक एवं व्यावसायिक जीवन में सामंजस्य

लॉकडाउन के दौरान लोगों ने अधिकांश समय अपने घरों

में बिताया। पहले लोगों से अक्सर सुनने को मिलता था कि उन्हें घर एवं बच्चों के लिए समय नहीं मिल पाता है। कोरोना के कारण लोगों ने घर पर बच्चों एवं परिवारजनों साथ आनंद से समय बिताया। घर के कार्यों में पुरुषों ने हाथ बंटाकर नारी का सहयोग किया है। आनंद का अनुभूत पल लोगों को परिवार के लिए समय प्रबंधन हेतु झंकृत किया है। इसके अलावा छोटे – छोटे कार्यों के लिए दूसरों पर निर्भरता को कम कर स्वाबलंबी बनने का भी अवसर प्रदान किया है। यहां तक कि कोरोना के भय से लोग घरेलू नौकरों आदि से काम कराना बंद कर दिया। फलत: घर के छोटे – छोटे कार्य स्वयं कर लोग आनंदित हुए। यह परिवर्तन कोरोना की देन है। आशा की जाती है कि बाद में भी पारिवारिक एवं व्यावसायिक जीवन में सामंजस्य स्थापित करने के लिए लोग प्रेरित होंगे।

होम डिलवरी का दौर : लॉकडाउन के दौरान बाजार बंद रखे गए थे। आवश्यक वस्तुओं की दुकानें ही निर्धारित समय के लिए खुल रही थीं। लोगों को घरों में रहने की एडवाइजरी जारी की गई थी। इस दौरान आवश्यक सामानों के लिए लोगों ने जहां ऑनलाइन माध्यमों का सहारा लिया ,वहीं स्थानीय स्तरों पर भी सामानों की घर सुपुर्दगी प्रणाली में तेजी देखी गई। बाजार के बिना लोगों को आवश्यक सामानों की उपलब्धता जारी रही। काफी लोगों को यह प्रणाली पसंद हुई। वे इसे जारी रखना चाहते हैं। इस प्रणाली की सफलता एवं कोरोना प्रभाव के कारण बाजार के स्वरुप में भी बदलाव होंगे।

पर्यावरण : कोरोना महामारी आपदा के कारण जो कुछ सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं , उसमें पर्यावरण की स्वच्छता काफी महत्वपूर्ण है। सामाजिक - आर्थिक गतिविधियां कम होने एवं परिवहन आदि में कमी के परिणामस्वरुप धरती पहले की अपेक्षा अधिक स्वच्छ हुई। शुद्ध हवा का संचार होने लगा। प्रदूषित नदियों का जल पीने योग्य होने लगा। प्रकृति का सैंदर्य फिर से जादू बिखेरने लगा। एक अनुमान के अनुसार प्रदूषण में 40 % तक की कमी आई। इंटरनेशनल क्लाइमेट रिसर्च के अनुसार फरवरी में वायु प्रदूषण में 30 % की गिरावट देखी गई थी। यदि प्रदूषण के इस स्तर को लंबे समय तक बनाया रखा जाए तो हर साल हम लगभग 1 लाख लोगों की जान बचा पाएंगे। इस महामारी ने पर्यावरण के प्रति जागरूक होने के लिए लोगों को सचेत किया है।

सामाजिक कार्यक्रमों का स्वरूप : कोविड-19 महामारी आपदा ने सामाजिक कार्यक्रमों व उत्सवों का स्वरूप ही बदल दिया है। भारत वैसे भी उत्सवप्रिय देश है। यहां मनुष्य के सोलह संस्कारों की परंपरा रही है ,जो धूमधाम एवं समारोहपूर्वक मनाया जाता है। यहां मंदिरों में दर्शनार्थी हजारों एवं लाखों की संख्या में जाते हैं। कोरोना के चलते इसमें व्यापक बदलाव आ गए हैं। संप्रति अनेक सामूहिक व सामाजिक कार्यक्रम या तो स्थगित हो गए हैं या नए स्वरुप में हो रहे हैं। सीमित संख्या में लोगों की उपस्थिति है , बाह्य लोकचार कम है। फिजूलखर्ची पर रोक लग रही है। कार्यक्रमों में शांति एवं सादगी आ रही है। मंदिरों एवं पूजास्थलों में दर्शन एवं पूजा के तौर तरीके में बदलाव आ गए हैं। रेस्तरां एवं होटल आदि के लिए नई एडवाइजरी जारी की गई है, जिसमें कम से कम भौतिक स्पर्श एवं अन्य सुरक्षात्मक उपाय शामिल हैं।

इसके अलावा सामाजिक गतिविधियों एवं कार्यक्रमों का डिजिटलीकरण अधिक हुआ है। सेमिनार अब वेबिनार का रुप ले लिया है। बैठकें अब भी आयोजित हो रही हैं, किंतु विभिन्न ऑनलाइन माध्यमों से यह डिजिटल हो गई हैं। ऑनलाइन कक्षाएं भी चल रही हैं। चिकित्सा जगत में भी ऑनलाइन चिकित्सा में वृद्धि हुई है। कोरोना संकट के दौरान 'आरोग्य सेतु' एप्प इसका ज्वलंत उदाहरण है। विभिन्न गतिविधियों में आए ये डिजिटल बदलाव न केवल आगे जारी रहेंगे ,बल्कि सामाजिक जीवन को और अधिक प्रभावित करेंगे।

अपराधों में कमी : कोरोना महामारी के फलस्वरुप लागू लॉकडॉउन अवधि में देश में बलात्कार ,हत्या ,चोरी आदि मामलो में तेजी से गिरावट आई है। एक रिपोर्ट के अनुसार बलात्कार संबंधी अपराध में 83 प्रतिशत तक की कमी आई है। यदि अपराधों में कमी जारी रहती है तो इसे एक सकारात्मक बदलाव के रुप में लिया जाएगा।

नकारात्मक बदलाव: कोरोना महामारी आपदा के कारण सामाजिक परिदृश्य में नकारात्मक बदलाव भी सामने आए हैं । लॉकडाउन के फलस्वरुप व्यक्ति का समाजिक जीवन प्रभावित हुआ है। लोग अपने घरों में कैद रहे हैं। एक दूसरे से मिलना जुलना कम हुआ है। विशेष रुप से बच्चे एवं खिलाड़ी अधिक प्रभावित हुए हैं। खिलाड़ियों की जिंदगी तो व्यायाम ,फिटनेस एवं अभ्यास पर चलती है। लॉकडाउन के कारण यह सब बंद था। फलत: कई लोग अवसाद के भी शिकार हुए हैं। बच्चे चिड़चिड़े होने लगे हैं। इस दौरान घरेलू हिंसा के मामलो में तेजी से वृद्धि हुई है। लॉकडाउन अवधि में कुल 587 मामले दर्ज किए गए हैं। राष्ट्रीय महिला आयोग के आंकड़ों के अनुसार घरेलू हिंसा के मामलों में 45 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

कोरोना महामारी आपदा भारतीय सामाजिक जीवन की असमानता के परिदृश्य को भी उजागर किया है। करोड़ों लोगों के काम छीन गए हैं। शहरों एवं महानगरों में रहने वाले गांव के मजदूरों को काम से हटाने के बाद उन्हें भूखे प्यासे सैंकड़ों किलोमीटर की दूरी पैदल तय कर अपने घर लौटने के लिए विवश होना पड़ा है। भारत का एक वर्ग वह भी है ,जो लॉकडाउन के दौरान ऑनलाइन माध्यम से ई – शिक्षा जारी रखा एवं एक वर्ग वह भी, जिसके पास स्मार्ट फोन नहीं है , इंटरनेट कनेक्टिविटी नहीं है, दूर - दराज के गांवों में रहने वाले ऐसे बच्चे शिक्षा से वंचित रहे हैं। ये प्रश्न अनुत्तरित हैं कि क्या हकीकत पर चिंतन कर हम बदलाव के लिए तैयार होंगे ?

आर्थिक परिदृश्य में बदलाव : कोरोना महामारी आपदा के कारण सबसे ज्यादा बदलाव अर्थ जगत में हुआ है। आई एम एफ के अनुसार इस महामारी के कारण भयानक वैश्विक महामंदी की आशंका है। ऐसा कहा जा रहा है कि यह अब तक की सबसे बड़ी मंदी साबित होगी। भारत के परिप्रेक्ष्य में भी आर्थिक स्थिति भयावह है। विकास दर लगातार कम हो रही है। आर्थिक विश्लेषकों के अनुसार विकास दर नकारात्मक भी हो सकती है। मंहगाई दर भी बढ़ रही है। खुदरा मंहगाई दर मार्च 2019 में 2.86 में 2.86 % थी, वह मार्च 2020 में 5.54 % पर पहुँच गई है। देश में बेरोजगारी 45 वर्षों में उच्चतम स्तर पर है। अनुमान है कि लॉकडाउन के कारण महज अप्रैल 2020 माह में 12 करोड़ भारतीयों को नौकरी गंवानी पड़ी। अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए देश को अनलॉक किया गया है ,पर कोरोना संक्रमण का खतरा मौजूद है । कोरोना के फलस्वरुप आर्थिक गतिविधियां कुछ प्रतिबंधों एवं नियमों के साथ चालू की गई है। कुछ नए प्रयोग भी किए जा रहे हैं। इससे आर्थिक जगत की गतिविधियों में बदलाव आए हैं। कुछ चुनौतियां अवसर के रुप में भी परिणत हुई हैं। भारत को कोरोना महामारी के साथ नियमों का पालन करते हुए नए ढंग से जीना सीखना होगा और भारत सहित संपूर्ण विश्व इसके लिए तैयारी कर रहा है। आर्थिक जगत के बदलाव को निम्नांकित रुप में देखा जा सकता है –

वाणिज्यिक/आर्थिक गतिविधियों का डिजिटलीकरण :

यूँ तो पहले से ही जीवन के विभिन्न क्षेत्रों सहित अर्थव्यवस्था में तकनीक का प्रयोग बढ़ रहा है , किंतु कोरोना संकट ने इसे एक नया आयाम दिया है। लॉकडाउन के दौरान इसमें काफी वृद्धि देखी गई । सामाजिक भौतिक दूरी को बरकरार रखने के लिए जरूरी है कि लोगों के संपर्क में कम से कम आया जाए। ऐसे में वर्तमान समय में ऑनलाइन बाजार तेजी से विकसित हो रहे हैं। ऑनलाइन बाजार से खरीदारी करना सुरक्षित भी है और वस्तुएं भी उचित दाम पर घर में ही उपलब्ध करा दी जा रही है। कोरोना महामारी आपदा के चलते बाजार बंद कर दिए गए थे, लेकिन ऑनलाइन शॉपिंग से बाजार स्वयं लोगों के द्वार पर पहुंच गए । अब लेन देन में उन स्थितियों से बचने का प्रयास किया जाएगा , जिसमें स्पर्श की गुंजाइश रहती है। ऐसी स्थिति में डिजिटल स्वरुप का बढ़ना स्वाभाविक है। आने वाले दिनों में ई – कॉमर्स , ऑटोमेशन ,रोबोटिक्स आदि के प्रयोग बढ़ेंगे। बैंकिंग व्यवस्था तकनीक पर अधिक निर्भर होकर वर्चुअल होंगी व डोर स्टेप बैंकिंग लोगों को अधिक सुविधाजनक लगने लगी है। यह बैंकिंग व्यवस्था के लिए अनिवार्यता बनती जा रही है। इसके साथ डिजिटलीकरण को सर्वसुलभ एवं सुगम बनाने के लिए भी हमें इस क्षेत्र में बहुत कुछ बदलाव करने होंगे।

घर से कार्य (वर्क फ्रॉम होम) की संकल्पना : पहले

वर्क फ्रॉम होम संकल्पना कुछ प्राइवेट व आईटी कंपनियों में सीमित स्तर पर लागू थी ,किंतु कोरोना महामारी आपदा के चलते वर्क फ्रॉम होम संकल्पना को सरकारी कार्यालयों / उपक्रमों में भी लागू किया गया। ज्यादातर कार्यालयों को बंद कर दिया गया था । कुछ कार्यालयों ने 40-50 प्रतिशत कर्मचारियों के साथ कार्य किया एवं शेष कर्मचारियों को घर से कार्य करने की अनुमति दी गई। कोरोना ने चिंतकों को इस व्यवस्था का लाभ लेने तथा इस पर मंथन करने के लिए प्रेरित किया है। वस्तुत: यह व्यवस्था कार्य की दृष्टि से लचीली एवं आर्थिक दृष्टि से किफायती है। बड़े शहरों में कार्यालय रखने के लिए किराया, फर्नीचर व साजसज्जा, बिजली आदि पर अधिक व्यय करने होते हैं । अब सरकारी एवं निजी कंपनियां वर्क फ्रॉम होम संस्कृति को आगे भी जारी रखने पर विचार कर रही है, किंतु वर्क फ्रॉम होम से मिलने वाले परिणाम पर भी गौर करना अपेक्षित होगा एवं इसके लिए अनुशासन एवं कोड भी बनाने होंगे। यदि इसे लागू किया जाता है तो तो यह क्रांतिकारी साबित हो सकता है।

स्वरोजगार एवं आत्मनिर्भरता की प्रेरणा एवं नवाचारों को प्रोत्साहन : कोरोना संकट के कारण भारत में करोड़ों लोगों के रोजगार चले गए हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार कोरोना महामारी आपदा से निपटने के लिए लागू लॉकडाउन के कारण 84 प्रतिशत लोगों की आमदनी में कमी आई है। 21 मार्च 2020 को बेरोजगारी दर 7.4 प्रतिशत थी जो 5 मई 2020 को बढ़कर 25.5 प्रतिशत हो गई है। कोरोना संक्रमण का भय लोगों की भूख नहीं मिटा सकता है। एक तरफ बीमारी है तो दूसरी ओर जीवन के प्रति जिम्मेदारी भी है। लोगों ने स्व रोजगार की योजनाओं पर आगे बढ़ना आरंभ कर दिया । इतना ही नहीं, कोरोना महामारी आपदा के कारण उद्यमियों में आत्मनिर्भरता भी जगी है । माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में प्रतिदिन 2 लाख पीपीई किट तथा 2 लाख एन 95 मास्क के निर्माण का उल्ल्लेख कर इसे रेखांकित किया था। भारत सरकार ने अर्थव्यवस्था में प्राण फूंकने के लिए 20 लाख करोड़ रु.के आर्थिक पैकेज की घोषणा की ,जो भारत की जी.डी.पी. का 10 प्रतिशत है, जिसका औचित्य भारत को आत्मनिर्भर बनाते हुए अर्थव्यवस्था को गतिशील करना है । माननीय प्रधानमंत्री जी ने भारत को आत्मनिर्भर बनने हेतु पांच स्तंभों अर्थव्यवस्था, इंफ्रास्ट्रक्चर, सिस्टम, डेमोग्राफी और डिमाण्ड का उल्लेख किया है । इन्हीं पांच स्तंभों को आधार बनाते हुए भारत को कोरोना संकट से उबारकर आत्मनिर्भर बनाने के लिए किया जाएगा। लोग कहते हैं कि मुश्किलें इसलिए आती हैं कि आप दो कदम और आगे बढ़ सकें। कठिन परिस्थितियों में संघर्ष करने पर आत्मनिर्भरता का संबल प्राप्त होता है।

वोकल फॉर लोकल : लॉकडाउन के कारण सामानों की आवाजाही में बाधा उत्पन्न हुई , फलत: लोगों ने स्थानीय स्तर पर उत्पादित मालों का उपयोग करना आरंभ किया। संकट के समय लोकल ब्रांडों ने लोगों की जरुरतों को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अब इस संकट के कारण सरकार ने आम जनता से आग्रह किया है कि इन लोकल ब्रांडों को पहचान दिलाने के लिए अभियान चलाएं। इस अभियान की सफलता भारत के आर्थिक जगत के लिए युगांतकारी होगी ।

उपसंहार

कोरोना महामारी आपदा के कारण संपूर्ण विश्व में अभूतपूर्व संकट उत्पन्न हुआ। इस वायरस के कारण जब एक व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए दूसरे की निर्भरता का अंतर्संबंध सामने आया है तो सामाजिक एवं आर्थिक परिदृश्य में बदलाव तो स्वाभाविक है। व्यक्तिगत जीवन के साथ – साथ सामाजिक एवं आर्थिक परिदृश्य में कुछ ऐसे बदलाव महसूस किए गए जो कल्पनातीत थे, जिसे जारी रखना जीव जगत के लिए कल्याणकारी होगा। कुछ ऐसे बदलाव हुए या संकेत मिले , जिसे चुनौती के रुप में स्वीकार कर समाधान खोजना हमारा दायित्व है एवं कुछ बदलावों की आहट सुनकर कार्यनीति बनाना हमारी बुद्धिमानी होगी।

लॉकडाउन के कारण जीवन की गति शिथिल या यूँ कहें कि अवरुद्ध हो गई थी , लेकिन लंबे काल तक बंधन या अवरोध जीवन को स्वीकार्य नहीं है। जिंदगी बचाते हुए सामाजिक एवं आर्थिक जीवन का पुनर्द्धार करना इस

समय की मुख्य चुनौती है । इसलिए राष्ट्र को सावधानियों के साथ अनलॉक किया गया किंतु लोगों को तत्काल पहले वाली स्थिति मिलना मुश्किल है । लोगों को नव सामान्य (न्यू नार्मल) स्थिति का सामना करने के लिए स्वयं को तैयार एवं जागरूक करना होगा । इस बदले हुए परिवेश के संग ही जीवन में नए रंग भरने के लिए कार्य करने होंगे। सचमुच कोरोना महामारी आपदा से नि:सृत मंगल को सहेजते हुए नए बदलाव के साथ सामंजस्य स्थापित करने में विश्व का कल्याण निहित है।

गेवरा प्रोजेक्ट – बीमा बैंक शाखा

वित्तीय वर्ष 2020-21 के दौरान 30 लाख रू. का प्रीमियम अर्जित करने पर अगस्त 2020 माह में गेवरा प्रोजेक्ट शाखा को भारतीय जीवन बीमा निगम द्वारा बीमा बैंक शाखा घोषित किया गया । यह वर्तमान वित्तीय वर्ष में रायपुर अंचल की प्रथम बीमा बैंक शाखा है।

गेवरा प्रोजेक्ट शाखा के वरिष्ठ प्रबंधक श्री सुमित कुमार एवं शाखा के समस्त स्टाफ सदस्यों को इस विशिष्ट उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई।

बिना राष्ट्रभाषा स्वराष्ट्र को
गिरा आप गूँगी असमर्थ।
एक भारती बिना
हमारी भारतीयता का क्या अर्थ ?
मैथिलीशरण गुप्त

स्वतंत्रता दिवस समारोह

15 अगस्त 2020 को अंचल कार्यालय , रायपुर में हर्षोल्लास के साथ स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। इस अवसर पर अंचल प्रमुख श्री सत्य रंजन पण्डा ने झंडोत्तोलन किया। इस समारोह में अंचल कार्यालय के स्टाफ सदस्य सहित रायपुर नगर की शाखाओं के स्टाफ सदस्यों तथा सेवानिवृत्त स्टाफ सदस्यों ने भाग किया।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में अंचल प्रमुख श्री सत्य रंजन पण्डा ने कोविड -19 की वर्तमान स्थिति की चर्चा की एवं इससे बचने के लिए सभी एहतिहाती उपायों को अपनाते हुए बैंक एवं देश के विकास में योगदान करने के लिए स्टाफ सदस्यों का आह्वान किया । इस कार्यक्रम का संचालन श्री प्रणव कुमार पाणिग्रही ,मुख्य प्रबंधक (सुरक्षा) ने किया ।

हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं का संबंध

मोहित कुमार साहू
प्रबंधक
अंचल कार्यालय,रायपुर

विविधता में एकता भारत की पहचान एवं शक्ति है। यही अनूठी विशेषता यहां की विभिन्न बोलियों व भाषाओं का सौंदर्य भी है। भारत की विभिन्न बोलियां एवं भाषाएं यहां की सांस्कृतिक विविधता की मनोरम झांकी प्रस्तुत करती हैं। इन तमाम भाषाओं एवं बोलियों में जनसंख्या, क्षेत्रीय विस्तार और अन्य विविध दृष्टियों से हिंदी बड़ी भाषा है। हालांकि हिंदी भाषा स्वयं भी विभिन्न बोलियां का समुच्चय एवं संगम हैं। हिंदी की विभिन्न बोलियों में अवधी, ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुंदेली, बघेली, हड़ौती,भोजपुरी, हरयाणवी, राजस्थानी, छत्तीसगढ़ी, मालवी, नागपुरी, खोरठा, पंचपरगनिया, कुमाउँनी, मगही,गढ़वाली आदि प्रमुख हैं ,जिनका हिंदी को समर्थ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।
यह सर्वविदित है कि संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा स्वीकार करते हुए भी अन्य भारतीय भाषाओं की मर्यादा और महत्ता को संविधान की आठवीं अनुसूची में अंगीकार किया। इस समय कुल 22 भारतीय भाषाएं संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल हैं। हमारी सभी भाषाएं एवं बोलियां ज्ञान की धरोहर हैं। कई भाषाओं में उन्नत साहित्य व विरासत है तथा इनकी हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

हिंदी भाषा के विभिन्न रूप हैं एवं राजभाषा का स्वरूप भी काफी महत्वपूर्ण है। राजभाषा हिंदी के विकास में विभिन्न क्षेत्रीय बोलियों एवं भाषाओं का काफी महत्व है। इसे संविधान में स्वीकार किया गया है तथा व्यावहारिक जगत में भी हमें यह देखने को मिलता है। विभिन्न बोलियों एवं भाषाओं को आत्मसात् करने वाली हिंदी के अलग – अलग रूप देश के विभिन्न भागों में प्रचलित हैं,जिसमें क्षेत्रीय बोलियों एवं भाषाओं की मिठास है। यहां तक कि हिंदी के भिन्न भिन्न रूप विदेशों में भी मिलते हैं। मारीशस, त्रिनिदाद, दक्षिण अफ्रीका, जावा, सुमात्रा, बर्मा, फिजी, घाना, सूरीनाम, नेपाल इत्यादि देशों में बसे करोड़ों भारतवंशियों की भाषा हिंदी है। कई देशों में तो हिंदी की शाखाएं विकसित हो रही हैं। फिजी में 'फिजिबात', सूरीनाम में 'सरनामी', उज्बेकिस्तान और कजाकिस्तान में 'पारया', दक्षिण अफ्रीका में 'नेताली' हिंदी की ही नई शैलियां हैं। यहां तक की कुछ शैलियों ने तो अपने व्याकरण और कोश बना लिए हैं।

क्षेत्रीय बोलियों एवं भाषाओं के महत्व को रेखांकित करते हुए संविधान के अनुच्छेद 351 में यह कहा गया कि संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

हिंदी अपने प्रादुर्भाव काल से ही बोलियों एवं भाषाओं से जीवन रस प्राप्त कर रही है तथा उसे पोषित करते हुए

जन जीवन का मंगल कर रही है। विभिन्न बोलियों एवं भाषाओं की लोकोक्तियां एवं मुहावरे आदि हिंदी में आकर लोकजीवन में घुल मिल गए हैं। हिंदी सबको साथ लेकर चलने वाली भाषा है। इसमें विभिन्न बोलियों एवं भाषाओं का योगदान है तथा यहां सभी का सम्मान एवं आदर है। हिंदी भाषी सूर, तुलसी, कबीर, मीरा को जितने सम्मान और आदर के साथ अपने जीवन में शामिल किया है ,उतनी ही श्रद्धा और भक्ति के साथ रसखान, रहीम, ज्ञानेश्वर, नामदेव, गुरु नानक, चैतन्य महाप्रभु आदि को भी सर आंखों पर लिया है।

देश का आध्यात्मिक वातावरण विभिन्न भाषा-भाषियों को निकट लाने में सहयोगी रहा है। देश के चारों धाम की यात्रा करने वाले यात्रियों की अपनी अपनी अलग भाषाएं रहते हुए भी उन सबकी एक सम्पर्क भाषा होती है, वह है हिंदी।

हिंदी स्वतंत्रता संग्राम के संघर्ष की भाषा रही है। स्वाधीनता संग्राम में विभिन्न राष्ट्र नेताओं की मातृभाषा हिंदी नहीं रहते हुए भी उन्होंने हिंदी को अपना स्वर बनाया। यह राष्ट्र के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान स्वाधीनता सेनानियों के बीच सम्पर्क का प्रमुख माध्यम रही है। यह देश के सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, साम्प्रदायिक एवं भाषायी समन्वय व सौहार्द का प्रतीक है।

हिंदी के विकास में हिंदीभाषी का जितना योगदान रहा है , उससे कम योगदान हिंदीतर भाषियों का नहीं है। धार्मिक आंदोलन, शिक्षा के प्रचार-प्रसार, सामाजिक व राजनीतिक गतिविधियों में शामिल अनेक गुजराती, मराठी, बंगाली, ओडिसी, तमिल, मलयाली भाषी लोगों ने हिंदी को जी-जान से चाहा है और प्राणपण से इसकी सेवा की है। हिंदी में पहला एमए होने का गौरव नलिनी मोहन सान्याल नामक एक बांग्लाभाषी ने पाया। ऐसा इसलिए हो सका, क्योंकि देश में पहली बार 1919 में हिंदी में एमए की पढ़ाई कलकत्ता विश्वविद्यालय में तत्कालीन कुलपति सर आशुतोष मुखर्जी ने शुरू कराई। हिंदी के प्रति समर्पित महात्मा गांधी , सुभाष चंद्र बोस , स्वामी दयानंद सरस्वती हिंदी भाषी नहीं थे। देश को राष्ट्रगान समर्पित करने वाले रवींद्रनाथ टैगोर बांगलाभाषी थे। दक्षिण भारतीय गोपाल स्वामी आयंगर ने ही संविधान सभा में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिलाने का प्रस्ताव रखा था। आचार्य बिनोवा भावे ने कहा था कि यदि मैंने हिंदी का सहारा न लिया होता तो कश्मीर से कन्याकुमारी और असम से केरल तक के गांव-गांव में जाकर मैं भूदान, ग्राम-दान का संदेश जनता तक न पहुंचा पाता।

हिंदी सर्व-सुलभ और सहज ग्रहणीय भाषा है। यह अधिकांश जनता की भाषा है, उसका स्वरूप समावेशी है। इसका कारण यह है कि उसकी लिपि देवनागरी विश्व की सबसे पुरानी एवं वैज्ञानिक लिपियों में से एक है, उसका शब्द भंडार एक तरफ संस्कृत से तो दूसरी तरफ अन्य अनेक देशी – विदेशी भाषाओं के शब्दों से समृद्ध हुआ है यानि उसके शब्द भंडार में तत्सम, तदभव, देशज और विदेशी शब्दों का समावेश है। उसमें क्षेत्रीय बोलियों एवं भाषाओं की विरासत को सहेजा गया है। इस प्रकार हिंदी आधुनिक भी है और पुरातन भी है। हिंदी के ये ही गुण उसे मात्र एक भाषा के दर्जे से ऊपर एक संस्कृति होने का सम्मान दिलाते हैं।

भारत की सभी भाषाएं एवं बोलियां समृद्ध हैं। विभिन्न भाषाओं का अपना साहित्य, शब्दावली तथा अभिव्यक्तियां एवं मुहावरे हैं। इन सभी भाषाओं में भारतीयता की एक आतंरिक शक्ति भी है। भले ही हमारी भाषाएं अलग-अलग हों, इन्हें बोलने वाले लोग देश के अलग-अलग भागों में रहते हों, पर ये सभी भाषाएँ भावनात्मक रूप से हमारी साझी धरोहर हैं। इससे हमारी राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी तथा भारत की विविध संस्कृति को बेहतर रूप में अभिव्यक्त किया जा सकेगा। हिंदी को केवल बोलचाल के स्तर पर ही संपर्क भाषा नहीं बनना है, बल्कि कला और साहित्य के स्तर पर भी यह दायित्व निभाना है। इससे न केवल राष्ट्रीय एकता बढ़ेगी बल्कि वैचारिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक आदान-प्रदान से भारतीय साहित्य और भारतीय भाषाएँ भी समृद्ध होंगी। क्षेत्रीय बोलियों एवं भाषाओं के साथ मिलकर हिंदी देश की एकता को मजबूत करती है। सभी भारतीय भाषाओं की प्यारी हिंदी विभिन्न भाषाओं के उपयोगी और प्रचलित शब्दों को अपने में समाहित करके सही मायनों में भारत की संपर्क भाषा होने की भूमिका निभा रही है। हिंदी जन-आंदोलनों की भी भाषा रही है। हिंदी के महत्त्व को गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने बड़े सुंदर

रूप में प्रस्तुत किया था। उन्होंने कहा था, 'भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी'। हिंदी के इसी महत्व को देखते हुए तकनीकी कंपनियां इस भाषा को बढ़ावा देने की कोशिश कर रही हैं। यह खुशी की बात है कि सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी का इस्तेमाल बढ़ रहा है। आज वैश्वीकरण के दौर में, हिंदी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। आज पूरी दुनिया में 175 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा पढ़ाई जा रही है। ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें बड़े पैमाने पर हिंदी में लिखी जा रही है। सोशल मीडिया और संचार माध्यमों में हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है।
जब हम विश्व पटल पर , तकनीक के प्लेटफॉर्म पर , मीडिया जगत में , सोशल मीडिया में , विज्ञापन की दुनिया में या अन्यत्र हिंदी के विस्तार की सुंदर गाथा लिखते हैं, तो वह हिंदी का मात्र राजभाषा रूप नहीं होता है , बल्कि उसमें अन्य बोलियों एवं भाषाओं की सुगंध एवं आत्मीयता रहती है ,जिससे लोग स्वत: आकृष्ट हो रहे हैं। यही कारण भी है कि हिंदी के राजभाषा रूप से अधिक अन्य रूपों का विस्तार कहीं अधिक हुआ है।

अत: राजभाषा हिंदी के विकास के लिए यह आवश्यक है कि उसे अन्य क्षेत्रीय बोलियों एवं भाषाओं से और अधिक जोड़ा जाए। यह हिंदी की सरलता एवं सहजता के लिए भी नितांत जरूरी है। इससे अपनेपन का भाव भी बढ़ेगा। भाषा जन सरोकारों और लोक परंपराओं से समृद्ध होती है तथा लोक परंपराओं की विरासत विभिन्न क्षेत्रीय बोलियों एवं भाषाओं में जीवित हैं।

भारत जैसे विशाल लोकतांत्रिक देश में सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का लाभ देश के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए भाषा का अत्यधिक महत्व है। सरकार की कल्याणकारी योजनाएं तभी प्रभावी बन सकेंगी जब आम जनता उनसे लाभान्वित होगी। इसके लिए आवश्यक है कि शासन का काम-काज आम जनता की उस भाषा में किया जाए ,जो उसे आसानी से समझ में आ जाए। हमारे लिए यह समझना जरूरी है कि राजभाषा हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से देश की जनता की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक सभी प्रकार की अपेक्षाओं को पूरा करने वाली योजनाओं व कार्यक्रमों को आखिरी सिरे तक पहुंचाना सरकारी तंत्र का अति महत्वपूर्ण कर्तव्य है और उसकी सफलता की कसौटी भी। यह सब स्थानीय बोलियों एवं भाषाओं से घुली मिली हिंदी के बिना संभव नहीं है।

क्षेत्रीय बोलियों एवं भाषाओं को जितना अधिक प्रश्रय दिया जाएगा, ये बोलियां एवं भाषाएं जितनी सशक्त होंगी, राजभाषा हिंदी का उतना ही विकास होगा। इससे कुछ राज्यों में तथाकथित हिंदी विरोध का स्वर भी कमजोर होगा।

नि: संदेह राजभाषा हिंदी के विकास में क्षेत्रीय बोलियों एवं भाषाओं का अत्यधिक महत्व है। विविधता में एकता का सूत्र स्थापित करने में , भाषा को सरलता व सहजता प्रदान करने में , समन्वय एवं सौहार्द स्थापित करने में, लोक जीवन में स्वीकार्यता की डोर पहुँचाने में , हर जगह एवं हर समय क्षेत्रीय बोलियां एवं भाषाएं हिंदी की संगिनी रही है।

यदि यह कहा जाए कि क्षेत्रीय बोलियों एवं भाषाओं से रस प्राप्त कर हिंदी उन बोलियों एवं भाषाओं को सशक्त बनाते हुए उनकी साझी विरासत से लोक जीवन में भारतीयता का संचार करती है तथा विश्व पटल पर भारतीयता का तिरंगा लहराती है ,तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

सफलता उन्हीं को मिलती है,
जिनके सपनों में जान होती है,
पंख से कुछ नहीं होता
हौसलों से उड़ान होती है।

आत्मनिर्भर भारत अभियान

स्नेह किरण मिश्रा
प्रबंधक
अंचल कार्यालय ,रायपुर

भारत भूमि से नि:सृत 'आत्म दीपो भव' का मंत्र आत्मनिर्भरता के महत्व का उद्घोष करते हुए सशक्त ,समर्थ व प्राणवंत जीवन के लिए हमें प्रेरित करता है । आत्मनिर्भरता की शक्ति से व्यक्ति मुश्किल समय में भी कई कठिनाइयों का सामना करते हुए प्रगति का पथ प्रशस्त करता है । जिस प्रकार व्यक्ति के जीवन में आत्मनिर्भरता का काफी महत्व है ,उसी प्रकार किसी भी राष्ट्र की आत्मनिर्भरता उसे समृद्ध एवं सशक्त बनाती है।

वर्षों की गुलामी के पश्चात् आजाद भारत को सशक्त बनाने के लिए देश में संसाधन की प्रचुरता एवं समावेशी विकास के मॉडल को दृष्टिगत करते हुए महात्मा गांधी ने देश को आत्मनिर्भर बनाने का सपना देखा था, पर अभी तक यह पूरा नहीं हो पाया है। हालांकि स्वतंत्र भारत में देश की अर्थव्यवस्था को विकास के पथ पर अग्रसर करने के लिए काफी कार्य किए गए हैं, किंतु आत्मनिर्भर भारत को फोकस कर बड़ी योजना तथा अभियान के तहत समग्र रूप से कार्यान्वयन नहीं हुआ है।

2020 में कोविड महामारी के संकट से दुनिया हिल गई। इस महामारी से जीवन का हर पहलू प्रभावित हुआ। अर्थव्यवस्था चरमरा गई। पहले से सुस्त पड़ी भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोविड -19 ने और कहर बरपाया तथा विकास दर ऋणात्मक हो गई। कोविड -19 के कारण उपजी विषम परिस्थितियों से देश को निजात दिलाने के लिए, नागरिकों के सशक्तीकरण के लिए एवं आपदा को अवसर में बदलने की मुहिम के रूप में 'आत्मनिर्भर भारत' का संकल्प लिया गया। देश को संकट से बाहर निकाल कर सशक्त बनाने की दिशा में कार्य करते हुए सरकार ने 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' के अंतर्गत 20 लाख करोड़ रुपए के विशेष आर्थिक और व्यापक पैकेज की घोषणा की है,जो जीडीपी का लगभग 10 % है । इसके साथ – साथ देश के प्राकृतिक संसाधनों, श्रम शक्ति , बौद्धिक क्षमता आदि के सम्यक् उपयोग द्वारा स्थानीयता के महत्व को बढ़ाते हुए स्वाबलंबी एवं सशक्त भारत के निर्माण के लिए 'वोकल फॉर लोकल' का अभियान चलाया गया है।

आत्मनिर्भर भारत के पाँच निम्नांकित मुख्य स्तंभ हैं -

1. अर्थव्यवस्था : ऐसी अर्थव्यवस्था , जो वृद्धिशील परिवर्तन (इंक्रीमेंटल चेंज) के स्थान पर बड़ी उछाल (क्वांटम जम्प) पर आधारित हो।
2. अवसंरचना : ऐसी अवसंरचना जो आधुनिक भारत की पहचान बने।
3. प्रौद्योगिकी : 21 वीं सदी प्रौद्योगिकी संचालित व्यवस्था पर आधारित प्रणाली।
4.गतिशील जनसांख्यिकी (वाइब्रेंट डेमोग्राफी): जो आत्मनिर्भर भारत के लिये ऊर्जा का स्रोत है।
5. मांग : भारत की मांग और आपूर्ति श्रृंखला की पूरी क्षमता का उपयोग किया जाना चाहिए।

आत्मनिभर भारत के तहत 20 लाख करोड़ का आर्थिक पैकेज भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए प्रेरक के समान है।

आत्मनिर्भर भारत अभियान का भारत की अर्थव्यवस्था पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। हालांकि अभी इसका पूर्ण कार्यान्वयन शेष है , किंतु आत्मनिर्भर भारत अभियान ने कोविड-19 से जर्जर अर्थव्यवस्था को सहारा देने का कार्य किया है। भारत में अपार प्राकृतिक, श्रम एवं बौद्धिक संसाधन हैं ,जिसका अभी तक पर्याप्त सदुपयोग नहीं किया जा सका है । भारत में कई ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ काफी प्रगति हुई है, परंतु कई क्षेत्रों में आज भी हम किसी न किसी रूप में अन्य देशों पर निर्भर हैं। विभिन्न देशों के साथ हमारा व्यापार संतुलन काफी घाटे में हैं । हमारी अर्थव्यवस्था 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था से काफी दूर है।

'आत्मनिर्भर भारत' संकल्प के कार्यान्वयन से भारतीय अर्थव्यवस्था की तस्वीर बदल सकती है। इस अभियान का अर्थव्यवस्था पर व्यापक प्रभाव पड़ने वाला है।

आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की दिशा के प्रथम चरण में चिकित्सा, वस्त्र, इलेक्ट्रॉनिक्स, प्लास्टिक, खिलौने जैसे क्षेत्रों को प्रोत्साहित किया जाएगा तथा द्वितीय चरण में रत्न एवं आभूषण, फार्मा, स्टील जैसे क्षेत्रों को प्रोत्साहित किया जाएगा।

सरकार ने आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की दिशा में उन 10 क्षेत्रों की पहचान की है, जिनमें घरेलू उत्पादन को बढ़ावा दिया जाएगा । सरकार ने इन 10 क्षेत्रों के आयात में कटौती का भी निर्णय किया है । इसमें फर्नीचर, फूट वेयर और एयर कंडीशनर, पूंजीगत सामान तथा मशीनरी, मोबाइल एवं इलेक्ट्रॉनिक्स, रत्न एवं आभूषण, फार्मास्यूटिकल्स, टेक्सटाइल आदि शामिल हैं।

आर्थिक उदारीकरण के बाद भारत ने कई क्षेत्रों में अपनी उत्पादन क्षमता में वृद्धि की है परंतु अन्य कई क्षेत्रों में भी जहाँ बेहतर संभावनाएँ हैं, भारतीय कंपनियाँ उत्पादन से हटकर व्यापार में एक सेवा प्रदाता के रूप में अधिक सक्रिय रही हैं।

पूर्व में भारत में जिन क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता बढ़ाने का प्रयास किया गया है उनमें हम काफी सफल भी रहे हैं, उदाहरण के लिए स्टील उत्पादन, सूचना प्रौद्योगिकी और मोबाइल फोन या अन्य इलेक्ट्रिक उत्पादों की असेंबली आदि में अपना स्थान बनाया है । भारत सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र के वैश्विक बाज़ार में आगे है, परंतु हार्ड वेयर के निर्माण में भारतीय कंपनियाँ उतनी सफल नहीं रही हैं। अन्य उदाहरणों में भारतीय दवा उद्योग, मोबाइल असेम्बली आदि हैं, जहाँ स्थानीय आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत किया जाना आवश्यक है।

भारतीय दवा उद्योग अपनी कुल आवश्यकता की लगभग 70% 'सक्रिय दवा सामग्री' चीन से आयात करता है परंतु इस महामारी के बाद भारत सरकार ने औद्योगिक क्षेत्र के सहयोग से देश में एपीआई निर्माण को प्रोत्साहन देने के लिए विशेष प्रयास किए हैं।

लगभग 135 करोड़ की आबादी के साथ भारत के पास निर्यात के अलावा उत्पादों की खपत के लिए एक बड़ा स्थानीय बाज़ार भी उपलब्ध है। कृषि और अन्य क्षेत्रों को इन परिवर्तनों के अनुरूप तैयार कर औद्योगिक विकास के साथ-साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था में योगदान दिया जा सकता है। उदाहरण के लिए विभिन्न प्रकार के कृषि उत्पादों की पैकेजिंग या उनसे बनने वाले अन्य उत्पादों के निर्माण हेतु स्थनीय स्तर पर छोटी औद्योगिक इकाइयों की स्थापना को बढ़ावा देकर औद्योगिक उत्पादन श्रृंखला में ग्रामीण क्षेत्रों की भागीदारी सुनिश्चित की जा सकती है।

'आत्मनिर्भर भारत' का भारतीय अर्थव्यवस्था पर तात्कालिक प्रभाव भी पड़ा है । आत्मनिर्भर भारत के तहत जारी सरकार के आर्थिक पैकेज एवं कल्याणकारी योजनाओं के फलस्वरूप जहां आम नागरिकों को मदद मिली , वहीं बाजार में तरलता आई । कोविड -19 से संकट झेल रहे व्यवसायियों एवं उद्योग जगत को विभिन्न प्रकार के ऋण एवं वित्तीय सहायता प्रदान कर राहत दिया गया। लॉकडाउन के फलस्वरूप बेरोजगार हुए लोगों को रोजगार प्राप्त हुए। कई स्वयं सहायता समूहों ने 3 करोड़ मास्क और सवा लाख लीटर सेनिटाइजर बनाए, जिसके माध्यम से शहरी गरीबों को काम उपलब्ध कराने की कोशिश की गई और ऐसी कई योजनाएं लायी गई, जिसमें गरीबों और मध्यमवर्गीय लोगो को अधिकतम रोजगार मिला और वह खुद पर आत्मनिर्भर हो सके।

संकट के समय ये योजनाएं लोगों का सहारा बनी । लोगों में विश्वास बढ़ा । उसके हुनर से देश लाभान्वित हुआ। नौकरी से बाहर निकाले कई युवाओं ने आत्मनिर्भरता का परिचय देते हुए खुद का व्यवसाय आरंभ कर राष्ट्र के नव निर्माण में जुट गए। पहले जीडीपी ग्रोथ -23 तक गिर गई थी , अब विभिन्न रेटिंग एजेंसियों द्वारा 2020-21 में जीडीपी में वृद्धि का अनुमान 5 % से 13 % रहने का लगाया है।

विभिन्न विशेलेषकों द्वारा यह कहा गया है कि अप्रत्याशित कोविड-19 महामारी और उसके बाद उत्पन्न हुई चुनौतियों के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था का आधारभूत ढांचा क्षेत्र तेजी से सुधार की राह पर है।

देश में बुनियादी ढांचा क्षेत्र की वृद्धि सरकार की प्रमुख प्राथमिकता रही है। बुनियादी ढांचा क्षेत्र में मजबूत कच्चे माल की व्यवस्था करना और तैयार माल बेचना (फॉरवर्ड-बैकवर्ड लिंकेज) से सभी वाकिफ हैं। अत: अधिक तेज और समावेशी आर्थिक विकास के लिए बुनियादी ढांचा क्षेत्र में निवेश सर्वोत्कृष्ट है।

सरकार की राजकोषीय नीति की प्रतिक्रिया आत्मनिर्भर भारत के दायरे में मांग और आपूर्ति की नीतियों का संयोजन रही है, जिसे महामारी से लड़ने और ईंधन तथा आर्थिक रिकवरी के लिए तैयार किया गया था। महामारी के खिलाफ भारत सरकार की राजकोषीय नीति की प्रतिक्रिया अन्य देशों के मुकाबले अलग थी। अन्य देशों के मुकाबले भारत में अर्थव्यवस्था के पुनरुद्धार के लिए प्रत्यक्ष बड़े प्रेरक पैकेज का चयन किया गया। सरकार ने कदम दर कदम दृष्टिकोण को अपनाया। वित्त वर्ष 2021-22 में भारत की वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर 11 प्रतिशत और सांकेतिक जीडीपी वृद्धि दर 15.4 प्रतिशत रहेगी, जो देश की आजादी के बाद सर्वाधिक है । व्यापक टीकाकरण अभियान, सेवा क्षेत्र में तेजी से हो रही बेहतरी और उपभोग एवं निवेश में त्वरित वृद्धि की संभावनाओं की बदौलत देश में आर्थिक विकास संभव होगा।देश के बुनियादी आर्थिक तत्व अब भी मजबूत हैं क्योंकि लॉकडाउन को क्रमिक रूप से हटाने के साथ-साथ आत्मनिर्भर भारत मिशन के जरिए दी जा रही आवश्यक सहायता के बल पर अर्थव्यवस्था बड़ी मजबूती के साथ बेहतरी के मार्ग पर अग्रसर हो गई है। इस मार्ग पर अग्रसर होने की बदौलत वर्ष 2019-20 की विकास दर की तुलना में वास्तविक जीडीपी में 2.4 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज होगी जिसका मतलब यही है कि अर्थव्यवस्था दो वर्षों में ही महामारी पूर्व स्तर पर पहुंचने के साथ-साथ इससे भी आगे निकल जाएगी । ये अनुमान दरअसल आईएमएफ के पूर्वानुमान के अनुरूप ही हैं जिनमें कहा गया है कि भारत की वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर वित्त वर्ष 2021-22 में 11.5 प्रतिशत और वित्त वर्ष 2022-23 में 6.8 प्रतिशत रहेगी। आईएमएफ के अनुसार भारत अगले दो वर्षों में सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था बन जाएगा।

एक आंकड़ों के अनुसार वित्त वर्ष 2020-21 में भारत की जीडीपी वृद्धि दर (-) 7.7 प्रतिशत रहने का अनुमान है। प्रथम छमाही में जीडीपी में 15.7 प्रतिशत की तेज गिरावट और दूसरी छमाही में 0.1 प्रतिशत की अत्यंत कम गिरावट को देखते हुए ही यह अनुमान लगाया गया है । विभिन्न क्षेत्रों पर नजर डालने पर यही पता चलता है कि कृषि क्षेत्र अब भी आशा की किरण है, जबकि लोगों के आपसी संपर्क वाली सेवाओं, विनिर्माण और निर्माण क्षेत्र बुरी तरह प्रभावित हुए थे जिनमें धीरे-धीरे सुधार देखे जा रहे हैं। सरकारी उपभोग और शुद्ध निर्यात के बल पर ही आर्थिक विकास में और ज्यादा गिरावट देखने को नहीं मिल रही है। नि:संदेह भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए 'आत्मनिर्भर भारत' एक महत्वाकांक्षी अभियान व संकल्प है ,किंतु इसकी राह में कई कठिनाइयां हैं। इन कठिनाइयों में आधारभूत संरचनाओं को मजबूत करने , श्रम कानूनों में सुधार , वस्तुओं एवं सेवाओं की गुणवत्ता एवं प्रतिस्पर्धी कीमत आदि की चुनौतियां हैं । वर्तमान में कई क्षेत्रों में भारतीय कंपनियों को बहुत अधिक अनुभव नहीं है, ऐसे में लागत को कम-से-कम रखते हुए वैश्विक बाज़ार की प्रतिस्पर्द्धा में बने रहने के लिये उत्पादों और सेवाओं की गुणवत्ता बनाए रखना एक बड़ी चुनौती होगी। हमारे उद्यमी, हमारे कारोबारी और कामगार विश्व कोटि के उत्पाद बनाने में पूरी तरह सक्षम है और हमने कई क्षेत्रों में करके भी दिखाया है।

सबसे बड़ी कमज़ोरी हमारी प्रक्रियाओं की है । हमारी जैसी प्रक्रियाओं से बिरले ही देश के उद्यमी उलझते होंगे। जटिल एवं पेचीदा कानून से कारोबार और व्यापार करना सुविधा नहीं सज़ा बन जाती है। आवश्यकता है एक प्रतिस्पर्धी कर व्यवस्था बनाने की। कारोबारियों की इनपुट लागत इतनी हो जाती है कि भारत में रहकर दुनिया के लिए निर्माण करना संभव नहीं होता। इसलिए हमें सबसे पहले अपनी प्रक्रियाओं को आसान करना पड़ेगा। प्रक्रियागत सुधारों को गतिशील बनाने एवं अन्य चुनौतियों को दूर करने से हमारी अर्थव्यवस्था मजबूत सुदृढ़ होगी।

नि: संदेह 'आत्मनिर्भर भारत' महत्वाकांक्षी अभियान है ,जिसके प्रभावी कार्यान्वयन से भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की सर्वश्रेष्ठ अर्थव्यवस्था के रूप में प्रतिष्ठित होकर जन – जन का संकल्प साकार करेगी।

बाल सितारे

आप हैं लुभांश कोहली। पेंशनवाड़ा शाखा के मुख्य प्रबंधक श्री अमित कोहली के सुपुत्र । आपने केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा -2020 उच्चतर ग्रेड के साथ उत्तीर्ण की है। इस उपलब्धि के लिए आपको हार्दिक बधाई। हम आपके मंगलमय एवं प्रगतिशील जीवन की कामना करते हैं।

भारतीय भाषा सौहार्द स्वरूप हिंदी दिवस के पावन अवसर पर राजभाषा विभाग , प्रधान कार्यालय द्वारा विभिन्न संवर्गों के स्टाफ सदस्यों के लिए ऑनलाइन प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में रायपुर अंचल के स्टाफ सदस्यों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया । राजभाषा विभाग , प्रधान कार्यालय द्वारा घोषित विजेताओं की सूची में रायपुर अंचल के दो स्टाफ सदस्य शामिल हैं –

कार्यपालक संवर्ग

श्री जीतेंद्र कुमार
मुख्य प्रबंधक
बैलाडीला शाखा

लिपिकीय संवर्ग

श्री सुशील केर्केटा
विशेष सहायक
बैलाडीला शाखा

अपनी उपलब्धियों से रायपुर अंचल को गौरवान्वित करने पर दोनो स्टाफ सदस्यों को हार्दिक बधाई।

आत्मनिर्भर भारत का आधार – अपनी भाषा, अपनी संस्कृति

सुभाष चंद्र साह
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय ,रायपुर

सर्वंपरवशंदु:खं , सर्वमात्मवशं सुखम् अर्थात् आत्मनिर्भरता सुख तथा परनिर्भरता दु:ख है । भारतीय चिंतन परंपरा का यह उद्घोष आत्मनिर्भरता का जयगान करता है।

जिस प्रकार व्यक्ति के जीवन में स्वाबलंबन अत्यधिक महत्वपूर्ण है , उसी प्रकार राष्ट्रीय जीवन में आत्मनिर्भरता सामर्थ्य एवं श्रेष्ठता का संवाहक है । परावलंबन उस समय अधिक दु:खदायी हो जाता है ,जब हमारी अपेक्षा उससे पूर्ण नहीं हो पाती है ,जिस पर हम आश्रित होते हैं। संकट के समय यह स्थिति उत्पन्न होने पर अंधकार और अधिक गहरा हो जाता है। 2020 में ऐसा ही संकट उत्पन्न हुआ , जब कोविड -19 से दुनिया हिल गई । भारत भी लड़खड़ा गया । संकट की चुनौतियां मनुष्य को झकझोरती अवश्य हैं ,लेकिन आपदा को अवसर में बदलने की दृष्टि से नई सृष्टि भी होती है। लड़खड़ाते भारत ने इस आपदा को अवसर में बदलने का जो संकल्प लिया , वह है – आत्मनिर्भर भारत के नव निर्माण का । आत्मनिर्भर भारत आपदा को अवसर में बदलने के नव सृजन का संकल्प है।

आर्थिक परिप्रेक्ष्य में आत्मनिर्भर भारत का तात्पर्य है - अपने यहां उपलब्ध संसाधनों का इष्टतम उपयोग करते हुए अपनी आवश्यकतानुसार उत्पादन करना। आयात पर निर्भरता को कम करना। आत्मनिर्भरता आत्म – केंद्रितता से अलग है। भारत वसुधैव कुटुंबकम् में विश्वास करता है। अत: हमारी आत्मनिर्भरता विश्व का बहिष्करण नहीं हैं, बल्कि अपनी क्षमता एवं शक्ति का उपयोग करना है। भारत में अपार प्राकृतिक, श्रम एवं बौद्धिक संसाधन हैं ,जिसका अभी तक पर्याप्त सदुपयोग नहीं किया जा सका है । इसके सदुपयोग से यह प्रगति के सर्वोत्कृष्ट शिखर पर पहुँच सकता है।

आत्मनिर्भर भारत के अंतर्गत यहां की गतिशील जन सांख्यिकी, कौशल विकास , प्रौद्योगिकी, स्थानीय के लिए मुखर (वोकल पर लोकल) , नवाचार आदि पर विशेष जोर दिया गया है। यह अपनी संस्कृति पर विश्वास एवं मातृभाषा के बिना संभव नहीं हो सकता है।

जिस आत्मनिर्भर भारत का स्वप्न हमने देखना प्रारंभ किया है, उसका मूल तत्व है अपने समाज, अपनी संस्कृति, अपने ज्ञान एवं अपनी दक्षता के मूल्य को समझकर उन पर आत्मविश्वास विकसित करना । यह आत्मविश्वास अपनी भाषा से सतत जुड़ाव के माध्यम से ही प्राप्त हो सकता है। जो नागरिक, ज्ञानी, शोधज्ञ, उद्यमी अपनी भाषा से जुड़ा रहेगा , वही अपने समाज में प्रचलित लोक ज्ञान , कौशल , लोक उद्यमों को जानेगा, समझेगा और उसकी विशेषताएं दूसरों को समझा पाएगा।

आत्मनिर्भर भारत का भौतिक पक्ष लोक दक्षता, देशज ज्ञान, स्थानीय उत्पादों की महत्ता पर अवलंबित है। इस पक्ष को भी अपनी संस्कृति एवं भाषाओं से जुड़ा नागरिक ही मजबूत कर सकता है। ऐसा ही नागरिक उन्हें जानकर भारत के बढ़ते बाजार से जोड़ पाएगा।

सबसे बड़ी बात है कि जो उन देशज एवं लोक कौशल को जीयेगा, उनका मूल्य समझेगा, वही दूसरों को भी उन्हें महत्व देने के लिए तैयार कर सकता है । नवोन्मेष एवं नवाचार के बिना आत्मनिर्भर भारत का सपना पूरा नहीं हो सकता है। नवाचार का उद्गम मौलिक चिंतन से होता है। यह तथ्य पूर्णत: प्रमाणित है कि मौलिक चिंतन व्यक्ति अपनी भाषा में ही करता है। लोक संस्कृति एवं साहित्य में अंतर्निहित ज्ञान के अन्वेषण से ही नवाचार बढ़ेगा। व्यक्ति अपने अन्वेषण, ज्ञान व कौशल को अपनी भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त कर पाएंगे ,जो अभी तक भाषायी अवरोध के कारण नहीं कर पाए हैं। लोक संस्कृति एवं लोक साहित्य ज्ञान की धरोहर है। अपनी भाषा एवं संस्कृति में आत्मीयता होती है । आत्मीयता से व्यक्ति का विश्वास बढ़ेगा। उसका यही विश्वास उसे ऐसे संसाधन में बदलेगा, जिससे वह आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए नींव के पत्थर का काम करेगा।

विकास की एक शर्त यह भी है कि जीवन की भाषा एवं शिक्षा की भाषा में टकराव नहीं हो । जीवन संस्कृति तथा शिक्षा की भाषा अलग होने पर आत्मा से विखंडन पैदा होता है और हम अपने साथ कई विरूद्धों को साथ लेकर चलने वाले नागरिक में परिवर्तित होते जाते हैं। टकराव के साथ चलने वाले व्यक्तित्व से विकास का रथ नहीं खींचा जा सकता है।

यह हमारा गौरव है कि भारत अनेक समृद्ध भाषाओं की विविधताओं का देश है । इन भाषाओं के साहित्य में जीवन मूल्य व ज्ञान – विज्ञान के बीज छिपे हैं। प्राचीन काल में भारत अपनी ज्ञान संपदा के बल पर न केवल विश्व गुरु के पद पर प्रतिष्ठित था ,बल्कि आर्थिक समृद्धि के कारण सोने की चिड़िया भी कहलाता था । पहले हमारे देश में मातृभाषा में ही शिक्षा प्रदान की जाती थी । वर्षों से हमारे देश पर विदेशी आक्रमणकारियों के हमले होते रहे और अपनी सत्ता को स्थाई बनाए रखने के लिए विदेशी शासकों ने भारतीय भाषाओं और ज्ञान-विज्ञान के स्थान पर अपनी भाषा और ज्ञान विज्ञान को स्थापित करने का प्रयास किया। आजाद भारत में अपनी शासन व्यवस्था लागू होने के बाद भी हमने मातृभाषाओं को नहीं अपनाया। इसका मुख्य कारण है पराधीन चेतना ।

ऐसा प्रतीत होता है कि हम अभी भी भाषाई एवं सास्कृतिक दासता से मुक्त नहीं हो पाए हैं तथा अपनी भारतीय भाषाओं के बदले अंग्रेजी पर जोर दे रहे हैं । इसका खामियाजा हमें भुगतना पड़ रहा है। देश पुरातन वैभव को प्राप्त नहीं कर पा रहा है।

आज स्थिति यह है कि छोटे-छोटे गांवों तक और उच्च शिक्षा ही नहीं नर्सरी तक भी अंग्रेजी माध्यम पहुंच गया है। हर कोई अंग्रेजी रट रहा है। देश के अधिकांश लोग मातृभाषा या तो पढ़ते नहीं और पढ़ते भी हैं तो केवल किसी औपचारिकता को पूरी करने की दृष्टि से। लोग अब न केवल अपनी भाषा से कटते जा रहे हैं बल्कि उसे हीन भाव से भी देखते हैं। मातृभाषा माध्यम लगभग लुप्त होता जा रहा है । अब नई पीढ़ियां यह सोच भी नहीं पाती कि ज्ञान-विज्ञान मातृभाषा के माध्यम से पढ़ा जा सकता है। नई पीढ़ियां यही सोचती हैं कि हम अंग्रेजी के बिना एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकते हें । हम आत्मनिर्भर होने के बजाय अंग्रेजी-निर्भर हो गए हैं।

जीवन के महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में देशी भाषाओं की उपेक्षा तथा अंग्रेज़ी भाषा पर निर्भरता से बहुत भारी नुकसान हो रहे हैं। इस निर्भरता का सबसे बड़ा कारण कुछ भ्रम हैं, जो हमारे दिलो-दिमाग में बस गए हैं, या बसा दिए गए हैं। ये भ्रम हैं:

1. अंग्रेजी ही ज्ञान-विज्ञान, तकनीक और उच्चतर ज्ञान की भाषा है।

2. अंग्रेजी के बिना अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काम नहीं चल सकता है ।

3. भारतीय भाषाओं में उच्चतर ज्ञान की भाषाएं बनने का सामर्थ्य नहीं है।

किंतु तथ्य बताते हैं कि ये धारणाएं भ्रम मात्र हैं और इसका कोई प्रमाण नहीं है । संसार के अधिकांश विकसित देश अपनी भाषा एवं संस्कृति के माध्यम से प्रगति कर रहे हैं। हमारी मूल चुनौती है - हिंदी एवं अन्य मातृभाषाओं को नहीं अपनाने के कारण विकास की यात्रा में आत्मनिर्भरता प्राप्त नहीं करने की । सदियों की गुलामी के पश्चात् हमने विकास का लंबा सफर तय अवश्य किया है । हमने कई क्षेत्रों में प्रगति की है, किंतु अभी भी पुरातन वैभव को प्राप्त नहीं कर सके हैं । हमारे आसपास स्वतंत्र हुए देशों पर नजर डालते हैं तो

वास्तविक स्थिति सामने आती है । जब भारत आजाद हुआ,उस समय कई ब्रिटिश उपनिवेशों को आजादी मिली थी । उस समय आसपास आजाद हुए कई देशों ने अंग्रेजी को अपने देश के विकास का जरिया नहीं बनाया। कोरिया,जापान,चीन आदि कई देश भारत के आसपास आजाद हुए और आज वे कहां खड़े हैं एवं हम कहां हैं ? इजराइल जब आजाद हुआ, उस समय उसके पास अपना कुछ भी नहीं था,लेकिन उसने अपनी भाषा में काम करने का निर्णय लिया ।इजराइल ने 2000 साल से मृत पड़ी हिब्रू को आज वैज्ञानिक शोध, नवाचार और आधुनिक ज्ञान निर्माण की श्रेष्ठतम वैश्विक भाषाओं में एक बना दिया है। इसके बल पर एक करोड़ के आसपास की जनसंख्या वाला इजरायल एक दर्जन से ज्यादा विज्ञान के नोबेल पुरस्कार जीत चुका है। आज भारत में जो भी तकनीक इस्तेमाल होती है , उसमें अधिकांशत: चीन या जापान की है। यदि हम जापान में अनुसंधान के क्षेत्र की बात करें तो अलग-अलग भाषाओं के शोधपत्र जापानी भाषा में एक महीने से भी कम अंतराल में अनूदित करा कर वहां के विद्वानों को पढ़ने के लिए मुहैया करा दिए जाते हैं । जिस देश की अपनी भाषाएं विकसित न हो सकीं, जिन्होंने अपनी भाषा को विकास का जरिया नहीं बनाया ,वे वैश्विक मानचित्र पर अमूमन पिछड़े हुए हैं। अफ्रीकी महाद्वीप में अनेक देशों में उनकी अपनी किसी स्वतंत्र भाषा का विकास नहीं हो सका है। कहना नहीं है कि ये अफ्रीकी देश विकास में बहुत पीछे हैं । आज विभिन्न क्षेत्रों में नई अवधारणाओं और आविष्कारों आदि के मामले में विपुल जनसंख्या के बावजूद भारत विश्व के छोटे – छोटे देशों से भी काफी पीछे हैं । विश्व के श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में हमारे विश्वविद्यालय की गिनती नहीं है । कारण यह कि लंबे समय तक विदेशियों और विदेशी भाषाओं की दासता ने हमें मौलिक चिंतन और नए विचारों के बजाए उन भाषाओं में निहित ज्ञान-विज्ञान पर निर्भर बना दिया । हम विदेशी भाषाओं के माध्यम से उपलब्ध विदेशी ज्ञान-विज्ञान पर निर्भर होते चले गए। हम यह भूल गए कि मौलिक चिंतन तो मातृभाषा में ही हो सकता है।

वस्तुत: परतंत्रता एक प्रकार की मानसिकता होती है, जो हमारे अलग-अलग लक्षणों और क्रियाकलापों से अभिव्यक्त होती है। निज-संस्कृति के गौरव की प्रतिष्ठा करने में यदि कोई सर्वाधिक समुचित माध्यम हो सकता है, तो वह हमारी अपनी भाषा ।

'आत्मनिर्भर भारत – श्रेष्ठ भारत' का जयगान पूरे विश्व में गुंजित हो , इसके लिए निज भाषा एवं संस्कृति को हृदयंगम करना होगा। आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को साकार करने के लिए हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की प्रभावी भूमिका के संदर्भ कुछ सुझाव निवेदित हैं –

शिक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान: शिक्षा का माध्यम जब तक मातृभाषा नहीं होगा ,तब तक मूलभूत परिवर्तन नहीं हो सकता है। यही विकास का मूलमंत्र है। यह प्रसन्नता की बात है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषा को मां के दूध के समान अनिवार्य कहा गया है। इसे सर्वोपरि सिद्ध करते हुए न केवल शिक्षा के माध्यम के रूप में, बल्कि उच्च शिक्षा व ज्ञान – विज्ञान , अनुसंधान आदि क्षेत्रों में भी मातृभाषा के प्रयोग पर बल दिया गया है । सरकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन के प्रति प्रतिबद्ध दिखाई पड़ती है। सचमुच राष्ट्रीय शिक्षा नीति आत्मनिर्भर भारत की सुदृढ़ नीव स्थापित करने में समर्थ है। यह नीति आत्मनिर्भर एवं श्रेष्ठ भारत के नव निर्माण के लिए क्रांतिकारी एवं वरदान साबित हो सकती है।

उच्च शिक्षा एवं विज्ञान आदि क्षेत्रों में भारतीय भाषाओं की पहुँच: राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 में उच्च शिक्षा एवं विज्ञान आदि क्षेत्रों में हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की पहुँच बढ़ाने के लिए व्यापक रूपरेखा तैयार कर अनुशंसा की गई है। यह लंबी अवधि की प्रक्रिया है। तात्कालिक उपाय के तौर पर आरंभिक प्रयास के रूप में भारतीय भाषाओं के माध्यम से इन क्षेत्रों में एक - दो विश्वविद्यालयों की स्थापना की जानी चाहिए ।

रोजगार के साथ जोड़ना– आज भारत में युवा पीढ़ी अंग्रेजी की ओर उन्मुख है,क्योंकि यह विविध स्तरों पर रोजगार एवं जीवन यापन के साथ जुड़ी है। जब हिंदी एवं अन्य देशज व लोक भाषाएं रोजगार का माध्यम बनेगी, तभी लोग इससे जुड़ेंगे । इन भाषाओं में निहित ज्ञान, विज्ञान व कौशल आदि का उपयोग भारत के विकास के लिए किया जा सकेगा। इसके लिए विभिन्न परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता को खत्म या न्यूनतम करना

होगा। रोजी रोटी से जुड़ने पर युवा पीढ़ी भारतीय भाषाओं की ओर आकृष्ट होगी।

भारतीय भाषाओं के माध्यम से प्रौद्योगिकी - आज संसार का कण – कण प्रौद्योगिकी से संचालित है। नवीनतम प्रौद्योगिकी को अंगीकार किए बिना हम आगे नहीं बढ़ सकते हैं। प्रौद्योगिकी आत्मनिर्भर भारत के पांच स्तंभों में से एक है । प्रौद्योगिकी का इष्टतम इस्तेमाल तब हो पाएगा ,जब उपयोगकर्ता को उसकी अपनी भाषा में प्राप्त होगी। नि:संदेह इस दृष्टि से हमारे देश में केवल अंग्रेजी में प्रौद्योगिकी नहीं होनी चाहिए , लेकिन हमने प्रौद्योगिकी को अंग्रेजी माध्यम से अपनाया। नतीजा सामने है। अब प्रौद्योगिकी में हिंदी एवं अन्य भाषाओं का समावेश किया जा रहा है। इससे धीरे – धीरे हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में प्रौद्योगिकी मिल तो रही है , पर यह विकास की तेज गति एवं आत्मनिर्भरता के लिए पर्याप्त नहीं है। जब तक हम किसी सॉफ्टवेयर आदि में भारतीय भाषाओं को लाने का प्रयास करते हैं ,तब तक कोई नई तकनीक आ जाती है। अत: अच्छा यह होगा कि प्रौद्योगिकी में हिंदी एवं भारतीय भाषाओं को समावेश करने के स्थान पर हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से तकनीक का आगमन हो।

अनुवाद क्षेत्र को व्यापक एवं उच्च स्तरीय बनाना – तकनीक , विज्ञान ,चिकित्सा आदि क्षेत्रो की शिक्षा को भारतीय भाषाओं के माध्यम से उपलब्ध कराने के लिए अनुवाद क्षेत्र को व्यापक , उच्च स्तरीय व आकर्षक बनाना होगा ताकि श्रेष्ठ विषय विशेषज्ञ , विद्वान एवं प्रतिभा का लाभ प्राप्त हो सके। ऐसा होने पर इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे। अपेक्षित एवं उच्चतरीय ज्ञान सामग्रियों का विभिन्न भाषाओं में गुणवत्तायुक्त अनुवाद संभव हो सकेगा ,जैसा कि जापान , रूस आदि विभिन्न देशों में होता है। यह गौरव का विषय है कि राजभाषा विभाग , भारत सरकार ने सी – डैकपूणे के तकनीकी सहयोग से आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की दिशा में अच्छी पहल करते हुए अनुवाद के लिए स्वदेशी अनुवाद टूल्स 'कंठस्थ' तैयार किया है तथा कम समय में ही इसका डाटाबेस काफी सुदृढ़ हो गया है। यह निरंतर बढ़ता ही जा रहा है।

हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में सामंजस्य -
ऐसा माना जाता है कि भारत में मातृभाषाओं पर जोर देने की अपेक्षा अंग्रेजी पर निर्भरता का एक कारण हिंदी भाषी एवं हिंदीतर भाषियों का कथित संघर्ष भी है। इसे दूर करने के लिए भारतीय भाषाओं के बीच संबंध को अधिक प्रगाढ़ करने होंगे। विभिन्न देशी भाषाओं के प्रमुख शब्दों को हिंदी में समावेश करना चाहिए तथा हिंदी के शब्दों को अन्य भाषाओं में। यदि प्रत्येक हिंदी भाषी सप्ताह में हिंदीतर भाषा के न्यूनतम 2 अत्यंत उपयोगी ,प्रचलित व मिलते जुलते शब्दों को ग्रहणकर इसका प्रयोग करेंगे तो इससे अन्य भाषाओं के प्रति प्रेम बढ़ेगा एवं शब्द संपदा भी सुदृढ़ होगी। जिस तरह हिंदीतर भाषियों के लिए हिंदी की प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं , उसी प्रकार विभिन्न स्तरों पर हिंदी भाषियों के लिए हिंदीतर भाषाओं में प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएं। भारतीय भाषा सौहार्द दिवस मनाया जाए । राजभाषा विभाग , भारत सरकार द्वारा राजभाषा हिंदी के सफल कार्यान्वयन के लिए बारह 'प्र' (प्रेरणा ,प्रोत्साहन ,प्रेम ,प्राइज- पुरस्कार , प्रशिक्षण, प्रयोग , प्रचार ,प्रसार ,प्रबंधन , प्रमोशन – पदोन्नति, प्रतिबद्धता एवं प्रयास) की रूपरेखा तैयार करना अत्यंत श्लाघनीय है । इस रणनीति का उपयोग अन्य भारतीय भाषाओं के लिए भी किया जाना चाहिए। इन उपायों से आपस में विभिन्न भाषा भाषियों में सद्भाव बढ़ेगा एवं मातृभाषाओं के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत का संकल्प पूरा हो सकता है।

सरकारी भाषा एवं सामाजिक भाषा की दूरी को कम करना – लोक साहित्य में संचित ज्ञान , विज्ञान, कौशल , नवाचार के सूत्र आदि का उपयोग आत्मनिर्भरता के लिए तभी किया जा सकेगा ,जब मानक व सरकारी भाषा तथा सामाजिक भाषा के बीच का अंतर कम से कम हो। उदाहरण के लिए हिंदी की बात करें तो सरकारी हिंदी एवं सामाजिक हिंदी के बीच विभाजन की रेखा है। शासन की बात आम जनता तक एवं आम जनता की बात शासन तक सीधे सीधे सरल रूप में पहुँचाने के लिए इस अंतर कम करना होगा। भेद मिटाना होगा। प्रचलित शब्दों के प्रयोग बढ़ाने होंगे।

संकट के समय कभी – कभी ऐसी शक्ति जागृत होती है,

जो सामान्य स्थिति में दिखाई नहीं देती है। आपदा को अवसर में बदलने के लिए आज भारत आत्मनिर्भर बनने के लिए कृत संकल्प है। हमें इस संबंध में यह नहीं भूलना चाहिए कि कोई भी राष्ट्र केवल अर्थतंत्र से समृद्ध एवं आत्मिर्भर नहीं होता है ,बल्कि एक राष्ट्र पूर्ण होता है आर्थिक आत्मनिर्भरता के साथ- साथ सामाजिक चेतना ,सांस्कृतिक उत्थान , सभ्यता के उत्कर्ष एवं जीवन के प्रति श्रेष्ठता बोध से। मनुष्य की उसकी अपनी भाषा ही उस चेतना का निर्माण करती है। किसी समाज एवं देश की सांस्कृतिक विरासत वहां की भाषा में संरक्षित होती है। भाषा ही मानवीय स्पंदन है ,सौंदर्य है तथा वे तमाम जीवन व्यवहार भाषा में प्रकट होते हैं ,जो मनुष्य अपने में जीता है। अपनी सांस्कृतिक विरासत को नमन किए बिना तथा अपनी भाषा पर आत्मनिर्भर हुए बिना कोई राष्ट्र समृद्ध नहीं हो सकता। यूरोपीय, अमेरिकी, जर्मनी, जापान, रूसी, कोरियाई आदि देशों के लोगों के विकास और आत्मविश्वास का रहस्य स्व-भाषा के प्रति प्रेम, सम्मान एवं उसे सर्वोच्च प्राथमिकता देना है। वे तमाम ज्ञान -विज्ञान और अर्थचिंतन के साथ अपनी भाषा-संस्कृति के संग जीवंत रूप से गौरव एवं गर्व के साथ खड़े दिखते हैं। आत्मनिर्भर भारत के लिए राष्ट्रीय अस्मिता, स्व-भाषा एवं स्व-संस्कृति के महत्व को सर्वोपरि समझ कर सर्वांगीण उन्नति के रूप में आत्मसात् करना होगा ,तभी आत्मनिर्भर भारत का संकल्प सिद्ध हो सकेगा। अपनी भाषा एवं संस्कृति ही सभी उन्नतियों का मूल है। आत्मनिर्भर भारत की संकल्प सिद्धि में मातृभाषाओं की महत्ता पर हिंदी के महान कवि भारतेंदु हरिश्चंद की अमर पंक्तियों को हमें सदैव स्मरण रखना चाहिए –

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार ।
सब देसन से लै करहूं, भाषा माहि प्रचार ।।

अर्थात् अपनी भाषा से ही सभी प्रकार की उन्नति संभव है, क्योंकि यही सारी उन्नतियों का मूलाधार है। मातृभाषा के ज्ञान के बिना हृदय की पीड़ा का निवारण संभव नहीं है। विभिन्न प्रकार की कलाएँ, असीमित शिक्षा तथा अनेक प्रकार का ज्ञान, सभी देशों से जरूर लेने चाहिए, परन्तु उनका प्रचार मातृभाषा के द्वारा ही करना चाहिए।

****

संविधान का अनुच्छेद 351

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

****

रूक जाना नहीं , तू कहीं हार के

हर किसी की जिंदगी में एक ऐसा भी दौर ऐसा होता है जब व्यक्ति खुद को हारा हुआ महसूस करने लगता है। वह निराशा के गर्त में डूबने लगता है। मन में नकारात्मकता घर कर लेती है। कई बार ऐसा लगने लगता है कि जीवन ही बेकार है। हम कुछ भी नहीं कर सकते हैं। हमारे साथ जीवन में न्याय नहीं हो रहा है। जीवन में ऐसी स्थिति आने पर संभलने की जरूरत है।

किसी ने ठीक कहा कि गिरने का जोखिम उठाए बिना तो आप खड़े भी नहीं हो सकते हैं। इसलिए असफलता मिलने पर हार मान लेना , थक जाने पर रूक जाना तथा गिर जाने पर फिर से उठकर प्रयास न करना कहीं से भी बुद्धिमानी नहीं है। बाधाएं आने पर डटकर मुकाबला करना चाहिए। इसलिए असफल होने पर या मुसीबत आने पर पूरी क्षमता के साथ संघर्ष करना चाहिए। हमें जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं को जो सुलझाने की कोशिश करते हैं, वे आगे बढ़ जाते हैं तथा जो इससे डर जाते हैं , वे इसके जाल में फँस कर उलझ जाते हैं।

उतार चढ़ाव के दौर हर किसी की जिंदगी में आते हैं। ऐसे में हताश होकर हार मान लेना ठीक नहीं है। यही वह समय है जब मनुष्य की असली परीक्षा होती है । यदि इस चुनौती का सामना कर आगे निकल गए तो यकीन कीजिए जिंदगी की हर जंग में जीत हासिल करेंगे । इसलिए निराशा के दौर में जोश का जुनून न छोड़ें । असफलता की स्थिति में जीवन में किसी दूसरे अवसर पर प्राप्त अपनी सफलता के क्षण को याद करें तथा उससे ऊर्जा प्राप्त कर पुन: प्रयास करें। असफलता की स्थिति में व्यक्ति प्राय: तब अपना कदम पीछे कर लेता है,जब वह सफलता के बहुत करीब होता है। असफलता के क्षण को भूल जाएं। जिंदगी में हर आने वाला पल एक नवीन पल होता है। हमें नए सिरे से नवीन उत्साह एवं हौसले के साथ नई शुरूआत करनी चाहिए। हमें जीवन में हर पल सकारात्मकता से सराबोर रहना चाहिए। खुद को निरंतर तराशते रहना चाहिए। असफलता एवं अभाव में भी कदम आगे बढ़ाते जाना चाहिए। किसी महापुरूष ने ठीक ही कहा कि इंसान एक बीज की तरह है या तो आप इसे वैसे ही रख सकते हैं जैसा वह है या फिर आप इसे फूलों तथा फलों से लदे एक अद्भुत पेड़ के रूप में विकसित कर सकते हैं। असफलता एवं विपत्ति के समय के समय धैर्य धारण करना सीखना चाहिए। यदि मनुष्य अच्छा करने की कोशिश करता है ,फिर भी सफल नहीं हो पाता है ,ऐसी स्थिति में भी निराश नहीं होना चाहिए तथा यह विचार करना चाहिए कि सफलता के लिए जिस प्रयास की आवश्यकता है ,उसे अभी पूरा किया जाना शेष है । आपके द्वारा किए गए ठोस प्रयास संचित रहते हैं एवं कभी न कभी किसी कार्य की सिद्धि में अवश्य सहायक एवं फलीभूत होते हैं। किसी कठोर पत्थर के टुकड़े तो हथौड़े की अंतिम चोट से ही होते हैं, किंतु यह पहले के अनगिनत चोट से ही संभव होता है। जिंदगी भी एक किताब की तरह है ,जिसके कुछ पन्ने फीके एवं अरोचक होते हैं , किंतु जब हम किताब के पन्ने नहीं पलटेंगे तो कभी भी पूरी किताब का मजा नहीं ले पाएंगे ।

अत: हमें जीवन में तात्कालिक उदासियों के जाल में नहीं फंसना चाहिए ,बल्कि निरंतर आगे बढ़ते रहना चाहिए।

किसी ने ठीक कहा कि – जिंदगी गुजर जाती है यह ढूंढ़ने

में कि ढूंढ़ना क्या है , अंत में तलाश सिमट जाती है इस सुकून में कि जो मिला है , वह भी कहाँ साथ लेकर जाना है । जीवन में सकारात्मकता संकट के समय हमें संबल प्रदान करती है । किसी घटना , परिस्थिति आदि के प्रति हमारा जो नजरिया होता है ,वह हमारी सोच का परिचायक है । हमारी सोच हमारे संकल्प एवं विचार से निर्मित होती हैं। अत: हर परिस्थिति में सकारात्मक रहने के लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता होती है । संकल्प से सिद्धि मिलती है। हमें किसी भी परिस्थिति में संकल्प को भंग नहीं होने देना चाहिए तथा न ही साधना की निरंतरता को टूटने देना चाहिए बल्कि धैर्यपूर्वक आशा का दीप प्रज्वलित रखना चाहिए। जीवन में सकारात्मकता का संचार करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण सूत्र निम्नांकित हैं –

1) स्वयं की क्षमता एवं सामर्थ्य पर पूर्ण विश्वास रखें तथा लगातार अपने में निखार लाते रहें।

2) संकट की स्थिति में भी लक्ष्य पर फोकस करें, न कि बाधाओं पर।

3) नकारात्मक विचारों को चुनौती दें। सकारात्मक लोगों के साथ रहें।

4) अपने जीवन के खुशी के पल को याद करें। पूर्व की सफलता से ऊर्जा लें।

5) असफलता के बाद सफलता मिलने वाले प्रेरक प्रसंग से सीख लें। ऐसे महापुरूषों के प्रेरक संदेश को जीवन में उतारने का प्रयास करें।

6) शिकायत करने की प्रवृत्ति का परित्याग करें तथा दूसरों का आभार करने के गुण को जीवन में अपनाएं ।

7) जीवन में खुलापन लाएं । मुस्कुराएं , खिलखिलाएं तथा छोटी – छोटी खुशियों का भी आनंद लें।

8) व्यर्थ की चिंता की चिता से दूर रहें। वर्तमान में जिएं।

9) अपने शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान दें।

10) अनुभूति करें कि सब कुछ अच्छा हो रहा है।

महात्मा बुद्ध के जीवन का एक प्रसंग है। वे अपने शिष्यों के साथ गर्मी के समय भ्रमण पर निकले थे। रास्ते में एक दिन भगवान बुद्ध शिष्यों के साथ वृक्ष की छाया में बैठ गए । उन्होंने अपने शिष्य को नदी से जल लाने के लिए कहा। शिष्य जब नदी के पास पहुँचा तो देखा कि नदी का जल बहुत गंदा था। उसमें पत्ते तैर रहे थे और मिट्टी व कीचड़ की वजह से पानी काला नजर आ रहा था । इसलिए शिष्य बिना पानी लिए तत्काल वापस लौटकर बुद्ध को सारी बात बताई । महात्मा बुद्ध ने दूसरे शिष्य को उसी नदी से जल लाने को कहा । दूसरा शिष्य पात्र लेकर चला गया , लेकिन वह नदी से कुछ देर के बाद साफ पानी लेकर लौटा। महात्मा बुद्ध ने पूछा उस नदी का जल तो गंदा था , लेकिन यह पानी तो साफ है । शिष्य ने कहा कि प्रभु कुछ जंगली जानवरों के नदी से गुजरने की वजह से जल गंदा हो गया था। मैंने कुछ देर तक इंतजार किया । कुछ ही समय में पीछे से आने वाला पानी बहती गंदगी को अपने साथ बहाकर ले गया और पानी में घुली मिट्टी भी धीरे धीरे बैठ गई । इससे जल स्वच्छ हो गया तथा मैंने उसे पात्र में भर लिया । भगवान बुद्ध उसका जबाब सुनकर बहुत प्रसन्न हुए । उन्होंने कहा कि जीवन में ऐसी ही समस्याएं आती हैं , लेकिन इन्हें देखकर हमें अपना साहस नहीं खोना चाहिए, बल्कि ऐसी स्थिति में दोगुनी ताकत से प्रयास करना चाहिए। समय के साथ हमारे प्रयासों के चलते गंदगी रूपी समस्याएं स्वत: ही नीचे बैठ जाएंगी।

शिवमंगल सिंह सुमन की इन पंक्तियों को हमें सदैव स्मरण रखना चाहिए –

तूफानों की ओर घुमा दो नाविक 'नित पतवार'
सागर की अपनी क्षमता है,पर मांझी भी कब थकता है
जब तक सांसों में स्पंदन है,उसका हाथ नहीं रूकता है
इसके ही बल पर कर डाले सातों सागर पार ।

लोक आंगन – सिरपुर का लक्षमण मंदिर

सौरभ पी प्रकाश
प्रबंधक
महासमुंद शाखा

सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर देश दुनिया में विख्यात है । यह मंदिर भारत में ईटों से निर्मित पहला मंदिर है। यह छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से लगभग 80 किमी. तथा महासमुंद जिला मुख्यालय से 35 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

देवभूमि के नाम से विख्यात सिरपुर अपने अंदर इतिहास समेटे हुए है। यह स्थान विभिन्न संप्रदाय के मंदिरों ,मठों एवं देवालयों से सजा है। सिरपुर का अतीत सांस्कृतिक विविधता तथा वास्तुकला के लालित्य से ओत-प्रोत रहा है। सिरपुर प्राचीन काल में श्रीपुर के नाम से विख्यात रहा है तथा सोमवंशी शासकों के काल में इसे दक्षिण कौसल की राजधानी होने का गौरव हासिल है। कला के शाश्वत नैतिक मूल्यों एवं मौलिक स्थापत्य शैली के साथ-साथ धार्मिक सौहार्द तथा आध्यात्मिक ज्ञान-विज्ञान के प्रकाश से आलोकित सिरपुर भारतीय कला के इतिहास में विशिष्ट कला तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध है । इसी सिरपुर में सफेद चबूतरों पर लाल ईंटों से निर्मित भव्य लक्ष्मण मंदिर बना हुआ है ,जिसका वास्तुशिल्प एवं सौंदर्य अप्रतिम है। इसमें बारीक नक्काशी और कला का चित्रण है, जो इस मंदिर को और आकर्षित बनाता है। ईटों से बना यह मंदिर, एक ऊंचे प्लेटफॉर्म पर और तीन प्रमुख भागों में बना हुआ है, जिन्हें गर्भ गृह (मुख्य घर), अंतराल (पैसज) और मंडप (एक शेल्टर) कहा जाता है। यह एक अत्यंत भव्य मंदिर है ,जो भगवान विष्णु को समर्पित है । इसमें उत्तर तथा दक्षिण दिशा की ओर से मंदिर प्रांगण में जाने के लिए सीढ़ियां बनी हुई है। मंदिर के प्रवेश द्वार के ऊपर भगवान विष्णु को उकेरा गया है। इस पर भगवान विष्णु के प्रमुख अवतार एवं विष्णु लीला के दृश्यों का वर्णन है। मंदिर के गर्भ गृह पर पांच फनों वाले सर्प पर आसीन लक्ष्मण जी की मूर्ति है ,जो शेषनाग का प्रतीक है।

भूगर्भ से उजागर तथ्यों से पता चलता है कि 635- 640 ई. में मगध नरेश सूर्यवर्मा की पुत्री तथा वैष्णव धर्मावलंबी रानी वासटा देवी ने राजा हर्षगुप्त की स्मृति में इस मंदिर का निर्माण कराया था। इस मंदिर को विधवा रानी वासटा देवी के अटूट प्रेम का प्रतीक भी माना जाता है । वास्तु ,स्थापत्य एवं इसके निर्माण कला की वजह से इसे लाल ताजमहल भी कहा जाता है। अलंकरण, सौंदर्य, मौलिक अभिप्राय तथा निर्माण कौशल की दृष्टि से यह अपूर्व है। यह दक्षिण कौशल में पति प्रेम की निशानी भी है।

साहित्यकार अशोक शर्मा ने ताजमहल को पुरूष के प्रेम की मुखरता और लक्ष्मण मंदिर को नारी के मौन प्रेम व समर्पण का जीवंत उदाहरण बताया है। उनका मानना है कि इतिहासगत धारणाओं के आधार पर ताजमहल और लक्ष्मण मंदिर का तुलनात्मक पुनर्लेखन किया जाए तो लक्ष्मण मंदिर सबसे प्राचीन प्रेम स्मारक सिद्ध होता है।

सृजन

जिंदगी

प्रदीप कुमार उपाध्याय
प्रबंधक (विधि)
अंचल कार्यालय,रायपुर

यह जिंदगी भी कौन सी पहेली है
कब किस मोड़ पर ला खड़ा करती है,
कांटे ही कांटे हैं जहां उस राह पर सफर करती है,
जिंदगी हर बार एक नया गुल खिलाती है,
कभी खुशियां तो कभी गम लेकर आती है।

पहेली जिंदगी की सुलझती कहां ?
इस जीवन में क्या होने वाला है कोई जानता कहाँ,
कौन क्या है यहां, कोई किसी को पहचानता कहाँ ,
अपनी बीती जिंदगी को अक्सर भूल जाता है इंसान
एक पल की भी खबर नहीं है
जिस आने वाली जिंदगी की
उसके लिए ख्वावों का महल बनाता है इंसान।

जीवन में कई लोग मिलते हैं और बिछड़ जाते हैं,
कुछ को हम भूल जाते हैं, कुछ तो याद आते हैं,
यह जिंदगी भी कौन सी पहेली है
हम इसमें इतना खो जाते हैं कि
जिंदगी के दूसरे पहलू मौत को भी भूल जाते हैं।

बचपन

प्रणव कुमार पाणिग्राही
मुख्य प्रबंधक (सुरक्षा)
अंचल कार्यालय ,रायपुर

बचपन एक जमाना था
खुशियों का खजाना था
बारिश में भींगना था
धूप में तपना था
ठंड में ठिठुरना था
हर मौसम सुहाना था
सचमुच पल बचपन का अनमोल था।
बचपन के दिन कट्टी वाली दोस्ती थी
संग संग पढ़ना, लिखना, खेलना था
कभी लड़ना झगड़ना,कभी मिल जाना था
ना शिकवा ना शिकायत की भाषा थी
पल में रूठना , पल में मान जाना था
न अपने पराये का कोई भेद था
सबके साथ मेल जोल था
सचमुच पल बचपन का अनमोल था। (शेष पृ.सं. 14 पर)

प्रेरणा के पुष्प - मैं खुद बदलूँगा । दुनिया तभी बदलेगी ।।

एक दिन सारे कर्मचारी जब ऑफिस पहुंचे तो उन्हें गेट पर एक बड़ा-सा नोटिस लगा दिखा:--
'इस कंपनी में अभी तक जो व्यक्ति आपको आगे बढ़ने से रोक रहा था कल उसकी मृत्यु हो गई।
हम आपको उसे आखिरी बार देखने का मौका दे रहे हैं।
कृपया बारी-बारी से मीटिंग हॉल में जाएं और उसे देखने का कष्ट करें। '
जो भी नोटिस पढ़ता उसे पहले तो दु:ख होता ,...लेकिन फिर जिज्ञासा होती कि आखिर वह कौन था, जिसने उसकी प्रगति रोक रखी थी... ??
और वह हॉल की तरफ चल देता...। देखते-देखते हॉल के बाहर काफी भीड़ इकट्ठा हो गई । गार्ड ने सभी को रोक रखा था और उन्हें एक-एक करके अंदर जाने दे रहा था।
सबने देखा कि अंदर जाने वाला व्यक्ति काफी गंभीर होकर बाहर निकलता, मानो उसके किसी करीबी की मृत्यु हुई हो ! इस बार अंदर जाने की बारी एक पुराने कर्मचारी की थी...
उसे सब जानते थे। सबको पता था कि उसे हर एक चीज़ से शिकायत रहती है।
कंपनी से, सहकर्मियों से, वेतन से, तरक्की से, हर एक चीज़ से !!...पर आज वह थोड़ा खुश लग रहा था!!
उसे लगा कि चलो जिसकी वजह से उसके जीवन में इतनी समस्या थी, वह गुज़र गया। अपनी बारी आते ही वह तेज़ी से ताबूत के पास पहुंचा और बड़ी जिज्ञासा से उचक कर अंदर झांकने लगा। पर यह क्या...!!!

अंदर तो एक बड़ा-सा आईना रखा हुआ था....
यह देख वह कर्मचारी क्रोधित हो उठा और जोर से चिल्लाने को हुआ, तभी उसे आईने के बगल में एक संदेश लिखा दिखा--!
"इस दुनिया में केवल एक ही व्यक्ति है जो आपकी प्रगति... आपकी उन्नति... आपकी तरक्की रोक सकता है...
...और वह आप खुद हैं !!"

इस पूरे संसार में आप वह अकेले व्यक्ति हैं,जो आपकी जिंदगी में क्रांति ला सकते हैं।

आपकी जिंदगी तब नहीं बदलती...

जब आपका बॉस बदलता है,
जब आपके दोस्त बदलते हैं,
जब आपके पार्टनर बदलते हैं, या
जब आपकी कंपनी बदलती है...।

हमारी ज़िंदगी तब बदलती है

जब हम बदलते हैं;
जब हम अपनी सीमित सोच तोड़ते हैं,
जब हम यह महसूस करते हैं कि अपनी जिंदगी के लिए सिर्फ़ और सिर्फ हम ज़िम्मेदार हैं।

मैं खुद बदलूँगा। दुनिया तभी बदलेगी।।

राजभाषा नियम 1976 का नियम 12

प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम, नियमों तथा जारी किए गए निदेशों का अनुपालन समुचित रुप से हो रहा है एवं इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त एवं प्रभावकारी जांच के उपाय करे।

राजभाषा ज्ञान

1. राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित की जाने वाली त्रैमासिक पत्रिका कौन सी है ?

राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा त्रैमासिक रुप से प्रकाशित की जाने वाली 'राजभाषा भारती' है।

2. क्या 'क' क्षेत्र में रबड़ की मोहर केवल हिंदी में हो सकती है ?

नहीं, 'क' क्षेत्र में भी रबड़ की मोहर द्विभाषी होगी।

3. राजभाषा नियम ,1976 (यथासंशोधित) का नियम 6 क्या है ?

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्ति का उत्तरदायित्व होगा कि वह यह सुनिश्चित करे कि ऐसे दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार किए जाएं ,निष्पादित किए जाएं और जारी किए जाएं।

4. संविधान की 8वीं अनुसूची कुल कितनी भाषाएं शामिल हैं ?

संविधान की 8वीं अनुसूची में 22 भाषाएं शामिल हैं।

5. रायपुर अंचल भाषायी वर्गीकरण की दृष्टि से किस क्षेत्र के अंतर्गत आता है ?

रायपुर अंचल भाषायी वर्गीकरण की दृष्टि से 'क' क्षेत्र में आता है।

6. 'क' क्षेत्र में बैंक के साइनबोर्ड में भाषाओं का क्रम क्या होगा ?

'क' क्षेत्र में बैंक के साइनबोर्ड हिंदी एवं अंग्रेजी में होंगे ।

7. हिंदी दिवस कब मनाया जाता है ?

हिंदी दिवस 14 सितंबर को मनाया जाता है ।

8. क्या 'क' क्षेत्र में कार्यालय आदेश केवल हिंदी में जारी किया जा सकता है ?

नहीं, 'क' क्षेत्र में भी कार्यालय आदेश द्विभाषी जारी करना अनिवार्य है।

9. राजभाषा नियम ,1976 (यथा संशोधित 1987) का नियम 7 क्या है ?

कोई भी आवेदन , अपील या अभ्यावेदन जब भी हिंदी में किया जाए या उसमें हिंदी में हस्ताक्षर किए जाएं तो उसका उत्तर हिंदी में ही दिया जाए ।

10. राजभाषा अधिनियम,1963 (यथासंशोधित 1967) में कुल कितनी धाराएं हैं ?

राजभाषा अधिनियम,1963 (यथा संशोधित 1967) में कुल 9 धाराएं हैं।

11. विश्व हिंदी दिवस कब मनाया जाता है ?

विश्व हिंदी दिवस 10 जनवरी को मनाया जाता है।

12. अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस कब मनाया जाता है।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस 21 फरवरी को मनाया जाता है।

13. राजभाषा संकल्प कब पारित हुआ ?

राजभाषा संकल्प 1968 ई. में पारित हुआ।

14. राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के लिए राष्ट्रीयकृत बैंकों एवं वित्तीय संस्थाओं को कितनी श्रेणियों में रखा गया है।

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के लिए राष्ट्रीयकृत बैंकों एवं वित्तीय संस्थाओं को दो श्रेणियों में रखा गया है।

15. कंठस्थ क्या है ?

कंठस्थ स्मृति आधारित अनुवाद टुल्स है ।

भारतीय भाषाओं के सौहार्द स्वरूप हिंदी दिवस उत्सव

अंचल कार्यालय,रायपुर में उमंग व उत्साह के साथ हर्षोल्लास तथा सुरुचिपूर्ण वातावरण में 14.09.2020 को भारतीय भाषाओं के सौहार्द स्वरूप हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में यूको बैंक के स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया। उप अंचल प्रमुख श्री सुरेश कुमार दास ने बैंक में राजभाषा प्रयोग के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए बैंक के राजभाषा मिशन से सभी को अवगत कराया। श्री सौरभ श्रीवास्तव , मुख्य प्रबंधक ने माननीय गृह मंत्री जी , भारत सरकार के हिंदी संदेश का पाठ किया । अंचल प्रमुख श्री सत्य रंजन पण्डा के साथ – साथ सभी स्टाफ सदस्यों ने हिंदी में कार्य करने की प्रतिज्ञा ली एवं इसके निरंतर प्रयोग का संकल्प दुहराया । हिंदी दिवस समारोह का संचालन एवं समन्वय मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री सुभाष चंद्र साह ने किया । अंचल की विभिन्न शाखाओं में भी हिंदी दिवस समारोह आयोजित किए गए।

भारतीय भाषा सौहार्द स्वरूप हिंदी माह के अवसर पर यूनिकोड टंकण , हिंदी निबंध , राजभाषा ज्ञान एवं बैंकिंग शब्दावली आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में स्टाफ सदस्यों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया । सभी विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। हिंदी माह के पालन से राजभाषा प्रयोग को गति मिली ।

अंचल कार्यालय के अलावा शाखाओं में भारतीय भाषा सौहार्द स्वरूप हिंदी दिवस मनाया गया।

चरोदा शाखा

नैला जांजगीर शाखा

भारतीय भाषा सौहार्द स्वरूप हिंदी माह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम

यूनिकोड हिंदी टंकण प्रतियोगिता : 2020

हिंदीतर भाषा वर्ग				
क्रमां	**नाम (श्री / सुश्री / श्रीमती)**	**पदनाम**	**कार्यालय / शाखा**	**स्थान**
1	मुक्ता नरेश कुमार	वरिष्ठ प्रबंधक	अंचल कार्यालय ,रायपुर	प्रथम
2	स्मिता डुंगडुंग	वरिष्ठ प्रबंधक	अंचल कार्यालय ,रायपुर	द्वितीय
3	विष्णु प्रिया साहू	वरिष्ठ प्रबंधक	अंचल कार्यालय ,रायपुर	तृतीय
4	दीपांजलि बाग	वरिष्ठ प्रबंधक	अंचल कार्यालय ,रायपुर	प्रोत्साहन
हिंदी भाषी वर्ग				
1	अभिषेक कुमार	प्रबंधक	अंचल कार्यालय	प्रथम
2	सुरभि चटर्जी	वरिष्ठ प्रबंधक	अंचल कार्यालय	द्वितीय
3	प्रदीप कुमार उपाध्याय	प्रबंधक (विधि)	अंचल कार्यालय	तृतीय
4	निहारिका सहाय	प्रबंधक	अंचल कार्यालय	प्रोत्साहन

ऑनलाइन राजभाषा ज्ञान एवं बैंकिंग शब्दावली प्रतियोगिता : 2020

हिंदीतर भाषा वर्ग					
क्रमां	**नाम (श्री / सुश्री / श्रीमती)**	**पदनाम**	**भाषायी वर्ग**	**कार्यालय / शाखा**	**स्थान**
1	मानस कुमार पोलई	वरिष्ठ प्रबंधक	हिंदीतर भाषी	जगदलपुर शाखा	प्रथम
2	विष्णु प्रिया साहू	वरिष्ठ प्रबंधक	हिंदीतर भाषी	अंचल कार्यालय	द्वितीय
3	प्रणव कुमार पाणिग्राही	मुख्य प्रबंधक (सुरक्षा)	हिंदीतर भाषी	अंचल कार्यालय	तृतीय
4	स्मिता डुंगडुंग	वरिष्ठ प्रबंधक	हिंदीतर भाषी	अंचल कार्यालय	प्रोत्साहन
हिंदी भाषी वर्ग					
1	राहुल कुमार	परिवीक्षाधीन अधिकारी	हिंदीभाषी	जगदलपुर शाखा	प्रथम
2	अभिषेक कुमार	प्रबंधक	हिंदीभाषी	अंचल कार्यालय	द्वितीय
3	शंकर लाल पॉल	वरिष्ठ प्रबंधक	हिंदीभाषी	अंचल कार्यालय	तृतीय
4	प्रदीप कुमार उपाध्याय	प्रबंधक (विधि)	हिंदी भाषी	अंचल कार्यालय	प्रोत्साहन

हिंदी निबंध प्रतियोगिता : 2020

क्रमां	नाम (श्री / सुश्री / श्रीमती)	पदनाम	कार्यालय / शाखा	स्थान
1	प्रदीप कुमार उपाध्याय	प्रबंधक (विधि)	अंचल कार्यालय, रायपुर	प्रथम
2	वीरेंद्र रजक	अधिकारी	पल्लारी	द्वितीय
3	प्रवीण कुमार ओझा	एस डब्ल्यू ओ ए	रोहरा	तृतीय

बाल प्रतिभा

ये दोनो चित्रांकन प्रतिभा संपन्न बालिका दक्षिता ए गुप्ता के हैं । दक्षिता सिविक सेंटर भिलाई शाखा की मुख्य प्रबंधक श्रीमती अनुराधा अग्रहरी की सुपुत्री हैं ।आप केपीएस नेहरू नगर भिलाई में सातवीं कक्षा की छात्रा हैं। अध्ययन में गहरी रुचि के साथ साथ आप कलात्मक प्रतिभा में निपुण हैं। हम आपके मंगलमय एवं प्रगतिशील जीवन की कामना करते हैं।

यूको राजभाषा मिशन

" राजभाषा के क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट श्रेणी
का बैंक बनने हेतु,
बैंक के सभी स्टाफ सदस्यों को
राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में,
प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सद्भावना द्वारा
दृढ़तापूर्वक सक्रिय कर एवं
राजभाषा नीति का शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित कर,
नवीनतम प्रौद्योगिकी को राजभाषा से जोड़कर,
बैंकिंग को जन-उन्मुख बनाते हुए
बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान करना "

यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का

Honours Your Trust

यूको राजभाषा प्रतिज्ञा

" हम, यूको बैंक के स्टाफ-सदस्य, सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञा करते हैं कि

हम भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु निरंतर कार्य करेंगे।

हम अपने बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन में गति लाने एवं

उसकी स्थिति को उन्नत करने के प्रति सदैव सजग रहेंगे।

हम अपने सामूहिक प्रयास से राजभाषा के क्षेत्र में अपने बैंक को गौरवशाली बनाएंगे।

हम स्वयं राजभाषा में दृढ़तापूर्वक कार्य करेंगे एवं दूसरों को भी प्रेरित करेंगे।

हम यह प्रतिज्ञा भी करते हैं कि हम राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम के उपबंधों

एवं वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करके

राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी

यूको बैंक को सर्वोत्कृष्ट श्रेणी का बैंक बनाएंगे।"

यूको बैंक (भारत सरकार का उपक्रम) UCO BANK (A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust